वर्ष : 22 अंक : 3-4 मार्च-अप्रैल : 2025 मूल्य : 20/-

गुरु सेवक परिवार

GSP SOCIAL HELPING HAND

स्वास्थ्य सहयोग संस्कार

स्वास्थ्य और संस्कार

उत्तर भारत का दर्शनीय स्थल

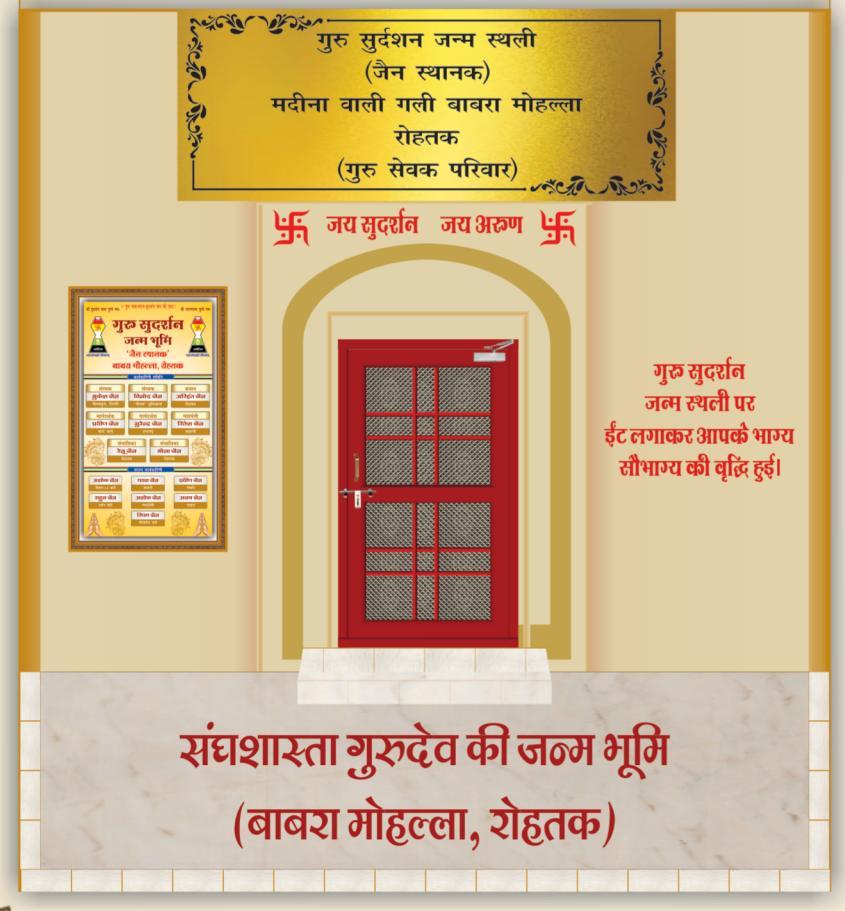

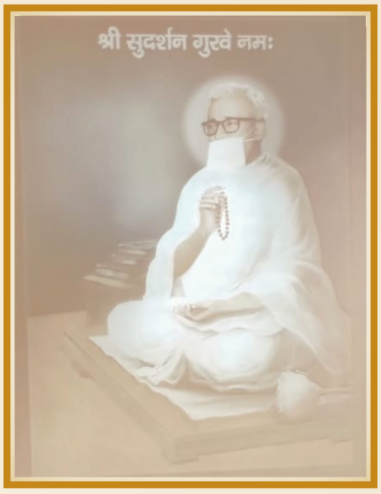

वर्ष में एक बार सपरिवार
असीम सौभाग्य के निर्माण हेतु अवश्य पधारें

हर जगह श्रद्धालुओं का तांता देखते ही बनता था

मुज्जफरनगर

मुज्जफरनगर

उचाना

उचाना

रोहतक

रोहतक

Vinay Jain
+91-9876113355

Parbhas Jain
+91-9888105905

KRIGLOW

A new age lighting brand aiming to Create the right emotion, high Quality of Space and improve the quality of enviroment through illumination.

- LED Lighting fixtures
- Custom Lighting
- Lighting solution from International renowned brands

OUR INTERNATIONAL COLLABORATIONS :-

WEVER & DUCRÉ LIGHTING · XAL · wästberg

Plot no 263 Phase 2 Industrial Area Panchkula Haryana
+91-9855253355, +91-9855243355, +91-9888105905

Let's get social:

卐 श्री महावीराय नमः 卐

!!श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः !! !!श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः !! !!तपस्वी श्री बद्रीप्रसादाय नमः !!

स्व. श्री प्रीतम लाल जैन (सिंघाणा वाले)

Anand Jain
8708625227

DEV RACHNA TEXTILES

Anuj Jain
9315370094

MFG OF: Fancy Dress Meterials

Surat Office: A.319, 3rd Floor, Landmark Empire, Saroli Road, Surat (Guj)

Anand Jain
8708625227

GSP FABRICS

Anil Jain
9827507805

Office: 2187/2, Ganesh Market, Chira Khanna, Nai Sarak, Chandni Chowk, Delhi-6

Vikash jain
9213125553

Deepak jain
9899165164

GSP®
INFINITE FASHION

JAIN UDAY TEXTILES

Mfd. By

Legging, Plazo, Pant, Petticoat, Kurti

IX/1208 B, Near Gali No. 0, Multani Mohalla, Subhash Road, Gandhi Nagar, Delhi-31

!! श्री रोशन गुरवे नमः !! !! श्री महावीराय नमः !! !! श्री धर्म गुरवे नमः !!

Fair Choice
Shirts

NGR Shirts

NAVKAR FASHION

IX/6728, JANTA GALI, GANDHI NAGAR, DELHI-31

Sandeep jain
8800171017

Pankaj jain
8527526336

!! श्री महावीराय नमः !!

!! श्री सुदर्शन गुरवे नमः !! !! श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः !!

NVR® PRODUCT

Make it's own way.....

जीओ और जीने दो

RAJESH JAIN
(लोहे वाले)
98140-61899

NAVNEET JAIN
9814644141

VINEET JAIN
9876561899

N.V.R. FORGINGS

Mfrs. of HAND TOOLS

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY

10, Waryana Industrial Complex,
Leather Complex Road, Jalandhar

Ph : 91-181-2650958, 98761-57400 Fax : 91-181-2650873

e-mail : nvrforgings10@yahoo.in I web : nvrforgings.com

N.V.R. OVERSEAS

45-A, Kapurthala Road, Near Patel Chowk, Jalandhar City
Ph : 2621066, 2621067 E-mail : nvroverseas@rediffmail.com

श्री सुदर्शन गुरवे नमः   श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः

गुरु सेवक परिवार

GSP

स्वास्थ्य • सहयोग • संस्कार

अहिंसा परमो धर्मः

सुशील जैन

9810078214

CHAIRMAN

Jain Iron & Steel Corporation

108, Loha Mandi, Ghaziabad

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष – गुरू सेवक परिवार

पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष – ऑल इण्डिया जैन कॉन्फ्रेंस

अध्यक्ष – रत्नत्रय उपकरण भंडार, गुरू सेवक परिवार

कार्यवाहक अध्यक्ष – जैन मिलन, गाजियाबाद

उपाध्यक्ष – समग्र जैन समाज संगठन, गाजियाबाद

महामंत्री – गाजियाबाद श्रीसंघ

परम संरक्षक – भगवान महावीर स्वामी पक्षी आवास एवं चिकित्सालय, मु.नगर

परम संरक्षक – आचार्य विमलसागर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट, शकरौली, जलेसर

संरक्षक – भगवान श्रषभदेव गऊशाला, मुरादनगर →

Narinder jain

80543-00035

Arihant Textiles

111, New Cloth Market

the Mall Bathinda-Punjab

Mob : +91-80543-00035

जय सुदर्शन, जय अरुण - गुरुवर के हैं सारे गुण -

Rajeev jain

Vardhman Handloom

Naya Bazar, Sunam, Punjab

Mob : +91-9803026100

Authorised Industrial Distributor

LUK INA FAG

SCHAEFFER GROUP

नीरज जैन

(9811116340)

Specialised industries : Cement, Paper & Sugar,
Steel and Heavy industries, Textiles and Oil and Gas.

NAMISHWAR ENTERPRISES

Head Office

2373/108, 1st Floor, Gopinath Building, Shradhanand Marg, G.B. Road, Delhi-110006
Ph.: +91-11-23217889, +91-11-23214243, Telefax+91-11-23217889
Mob.: +91-98111-16340, +91-93111-16340, e-mail : namishwar@yahoo.com

Sister Concern

DODOMA KILIMO

Manufacturer & Exporter of Sunflower Oil & Cake
Block-57, Area A, Dodoma, Tanzania

SHREE BALA JI REAL ESTATE HAMBRA ROAD LDH

ARYAN MITTAL ESTATES LLP

113 D, Kitchlu Nagar, Ludhiana, Ph: +91 9872842690

Dimple Mittal

Aryan Mittal

श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः श्री महावीराय नमः श्री अरुणचंद्र गुरवे नमः

रत्नत्रय प्रकाशन की अनुपम प्रस्तुति

स्वास्थ्य और संस्कार

शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य हेतु श्रेष्ठ मासिक पत्रिका

संरक्षक
विनोद जैन 'लुधियाना'

प्रधान सम्पादक
निर्मल जैन 'गंगानगर'

प्रबन्धन
दिनेश जैन 'गन्नौर'

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 8

प्रकोष्ठ 1. प्रवचन

1. लोभ की सूक्ष्म तरंगें 9
2. पंचांग का मंगलकारी दिन अक्षय तृतीया 11
6. धर्म के प्रतीकों को धर्म न समझें 13

प्रकोष्ठ 2. ऐतिहासिक एवं तात्त्विक चर्चा

3. राणा सांगा 15
4. जिज्ञासा और समाधान 16
5. प्रशमसुख 18

प्रकोष्ठ 3. परिचय

7. समर्पित व्यक्तित्व श्री मनीष जैन 20
8. लाड़ली गुड़िया-ईरा जैन 20
9. प्यारी प्रियल जैन 21
10. गुरुभक्त और भ्राताश्री अंकुर-श्री निखिल 21

प्रकोष्ठ 4. शुभ स्वास्थ्य

11. आरोग्य की कुंजी 22
12. चमत्कारी घरेलू नुस्खे 23

प्रकोष्ठ 5. JUST FOR KIDS

13. मित्रों का अभिनय 24
14. अरिहंत वर्णमाला 25

प्रकोष्ठ 6. इन्द्रधनुषी विविधताएँ

15. पीड़ित पशुओं की सभा 26
16. एक गुमराह युवक के ... 28
17. Write What's The Right 31
18. मजेदार मसाला 31

प्रकोष्ठ 7. सूचना एवं समाचार

19. यू.पी. विचरण का आँखों देखा हाल 33
20. बांगर प्रदेश में हुई बल्ले बल्ले 37
21. पंजाब विचरण, चातुर्मास रोहिणी, दिल्ली 38

अभिकल्पन : राजेश पाण्डेय (9818460232), सज्जा : अजय जैन 'प्रथम' (9711774004)

प्रधान कार्यालय - स्वास्थ्य और संस्कार - प्रधान कार्यालय

एस. एस. जैन सभा, वेलफेयर ट्रस्ट
424, चौथी मंजिल, डी-मॉल-ट्विन डिस्ट्रिक सेन्टर,
सैक्टर-10, रोहिणी, दिल्ली-85 मो. : 8800779013

ANDROID APP ON Google Play

www.gurusewakparivaar.org info@gurusewakpariwaar.org https://www.facebook.com/gspparivaar

सम्पादकीय

गुरु सुदर्शन जन्मभूमि एक दर्शनीय स्थल

करीब 102 वर्ष पूर्व उत्तरी भारत की श्रद्धाओं के प्राण तत्त्व संघशास्ता पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. ने माता सुंदरी की कोख से एक साधारण बालक ईश्वर के रूप में जन्म लिया।

आज उनके निमित्त लाखों उपासक मोक्ष-मार्ग पर चल रहे हैं। उन्हीं गुरुदेव की जन्म भूमि रोहतक के बाबरा मोहल्ले में है, जो पिछले कुछ समय से किसी अजैन बंधु के नाम से रजिस्टर्ड थी। गुरु सेवक परिवार के श्रावकों में जागृति आई और उन्होंने इस पवित्र भूमि को लागत मूल्य से अपने नाम कर लिया। वही छत, वही कड़ी, वही कमरा, वही दरवाजे; आपके नयनों को निहारने के लिए मिलेंगे। आवश्यक रैनोवेशन कर उस स्थल को अति आकर्षक बनाया गया है।

उनके शताब्दी वर्ष पर 250 से अधिक समाजों ने एक-एक ईंट की आहूति देकर, इसे आम जन के लिए उपलब्ध किया। यहाँ पर दो समय नित्य आरती होती है। श्रद्धालु श्रावक एवं श्राविकाएँ मन में भाव भरकर चाव से इस भूमि के पवित्र परमाणुओं को नमन करने आते हैं। जो भी साधु-साध्वी रोहतक में पधारते हैं, वो भी वहाँ पधारकर इस भूमि की गरिमा को वृद्धिगत करते हैं।

आपके घर में कोई विवाह या जन्मोत्सव का प्रसंग हो तो आप भी पुण्य वृद्धि एवं कार्य की निर्विघ्न-सम्पूर्ति हेतु यहाँ शुभ भावना को अर्ज करने हेतु अवश्य आएँ।

ध्यान रहे, यहाँ पर धूप, दीप पूर्णत: वर्जित है। स्थानकवासी परंपरा जड़ पूजा के महत्त्व को नकारती है। आत्मा को मानना / जानना ही सैद्धांतिक साधना का आधार है। जन्मभूमि का स्थल तो मात्र अपने गुरुदेव की याद का एक जरिया है। उनके महान गुणों से आगामी युग परिचित हो सके। इस हेतु जन्म स्थली को निहारना आवश्यक है।

यह जन्म स्थली अयोध्या की जन्म भूमि सी पवित्र और शिखर व गिरनार के जैसे महिमा से शोभित है। महान सौभाग्यशाली के कदम ही इस दर्शनीय स्थल के लिए उठेंगे। आप इस सौभाग्य के स्वामी बनने हेतु अवश्य आएं।

यहाँ पर शताब्दी वर्ष से हर वर्ष 4 अप्रैल को ध्वजारोहण होता है। उनके अनुयायी इस ध्वजारोहण में शामिल होकर उन्हें श्रद्धा की अंजलि अर्पण करते हैं।

जन्म 4 अप्रैल, 1923 दीक्षा 18 जनवरी, 1945

देवलोक गमन 25 अप्रैल, 1999

1

लोभ की सूक्ष्म तरंगें

संघशास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.

अनाथालय में पलते हुए उस बालक की इच्छा भी धनवान् बनने की रहती थी और उसकी इच्छा पूरी भी हुई। एक अमीर आदमी उस अनाथाश्रम का इंस्पेक्शन करने आया था। उसे बालक पसन्द आ गया। उसकी पत्नी भी तैयार हो गई और वे उसे गोद लेकर घर ले आए। उसका नाम उन्होंने कल्याणदास रख लिया। उसे पढ़ाया- लिखाया भी। अच्छे घर की पर गरीब सी कन्या राधा से उसका विवाह भी कर दिया। मगर उसकी मौलिक कमियों को निकाल नहीं सके। माता-पिता ने उसे बहुत हित शिक्षाएँ दीं, समझाया भी पर अपनी प्रवृत्ति को वह बदल नहीं पाया। बदलना चाहता भी नहीं था। इसी गम में उसके माता-पिता चल बसे। उसने उनके जाने का गम भी ऊपरी- ऊपरी मन से मनाया। उसके अन्तर में तो यही था कि अच्छा हुआ कि रोज-रोज की टोकाटाकी खत्म हो गई।

अब उसका सारा जीवन सुरा-सुन्दरी की भेंट चढ़ गया। लखनऊ की किसी नर्तकी 'रानी' को वह रखैल के रूप में ले आया। अपनी असली पत्नी को एक अलग मकान देकर कह दिया कि तुझे खर्चे की चिंता नहीं है। जो जरूरत हो, मिल जाएगा, पर मेरे निजी कामों में दखल देने की जरूरत नहीं है।

किसी विचारक ने लिखा है- मनुष्य दिन में ऐसे कुछ गलत काम कर लेता है कि उसे रात में नींद नहीं आती और रात में फिर ऐसा कुछ कर बैठता है जिसके कारण उसे दिन में भय बना रहता है। इस कारण उसके दिन-रात दोनों बिगड़ जाते हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन में ऐसा कुछ न करे, जिससे वह रात में सुख से सो न सके तथा सुबह किसी को मुँह दिखाने में शर्माए।

कल्याणदास को न दिन की चिंता थी न रात की फिक्र। न नींद का अहसास था, न मुँह दिखाने की परवाह। बस एक धुन थी- कैसे धन कमाऊँ और कैसे उसे उड़ाऊँ। उसके लिए कमाने के साधनों पर चिंता करना व्यर्थ था तथा उसके खर्चने के तरीकों पर खेद नहीं था।

एक सेठ मेरे पास आया। मैंने पूछा- लाला जी, आमदनी खर्च का कुछ हिसाब-किताब रखते हो या नहीं?

सेठ कहने लगा- गुरु महाराज, न आमदनी का पता न खर्चे का। सब अनाप-शनाप है।

मैंने कहा- लाला जी, ये अनाप-शनाप आदमनी और खर्चा जिंदगी की नींवों को उखाड़ देगा। अभी से संभलने की जरूरत है।

सुलक्खणी घड़ी थी, संतों की बात जंच गई और उसके बाद हर बात की व्यवस्था बना ली। आज वह सेठ बार-बार आकर आभार मानता है। कहता है- गुरुदेव, आपकी उस दिन की फटकार काम आ गई। आमदनी खर्चों का हिसाब तो बना ही लिया।

उसके बाद उठने-बैठने, सोने- जागने, लेने-देने सबका हिसाब-किताब बन गया और लाइफ स्मूथ हो गई जबकि मेरी कंपनी में मेरे जैसे ही कई साहूकार सब कुछ लुटा बैठे हैं और दिवालिया हो गए।

सेठ कल्याणदास का सितारा अभी बुलन्दी पर था इसलिए जिधर हाथ मारता था, कुछ न कुछ कमा ही लेता था।

जब लग जिसके पुण्य का पहुँचे नहीं करार।
तब लग उसको माफ है अवगुण करे हजार।।

एक दिन की बात है- उसके ड्राइंग रूम में पाँच आदमी आकर कुर्सियों पर बैठे। धीरे-धीरे बातें करने लगे और सेठ कल्याणदास की प्रतीक्षा करने लगे। सेठ जी भी अच्छी तरह बन-ठन के पहुँचे तो सभी आगंतुक भी खड़े हो गए। सेठ के साथ दो नौकर और एक मुनीम था। बैठने के बाद आपसी परिचय हुआ। आने वाले बंधु कहने लगे कि एक संस्था है- The Saint Kabir Home for the Destitutes. उसकी ओर से आपके पास आए हैं। पन्द्रह वर्ष से यह अनाथालय चल रहा है पर इन दिनों आर्थिक संकट से गुजर रहा है। बाहरी सहायता आ नहीं रही। आप सरीखे, समाजसेवी, उदार, महानुभाव के पास कुछ आशा लेकर आए हैं।

कल्याणदास फूलने लगा। हालांकि कभी किसी को दान नहीं दिया। किसी गरीब की मदद नहीं की केवल ऐश परस्ती में सब कुछ खर्चा किया। लेकिन आज रौब जमाने का मौका आया तो बिना संकोच के कहने लगा- देखो, मैंने सदा ही दीनहीन, जरूरतमंदों की सेवा की है। आपको कितनी राशि चाहिए?

आने वाले बंधु तो हैरान रह गए। खुशी से बोले- सेठ जी, आप तो राजा हैं, आपके लिए बड़ी से बड़ी राशि भी मामूली है। पर हमारा काम तो 50 हजार से चल जाएगा।

सेठ जी कहने लगे- रकम है तो ज्यादा। मगर दीन अनाथों के वास्ते मैं 50 हजार देने की कोशिश करूँगा लेकिन मेरी दो शर्तें हैं।

संस्था के पदाधिकारी एक स्वर में बोले- 'जरूर-जरूर, सब मंजूर होंगी।'

वे कह तो गए किंतु उन्हें क्या पता था कि सेठ का दिमाग कितना शातिर और शरारत भरा है। उसके दिमाग में कोई सेवा, परोपकार का शुभ भाव नहीं था। केवल दान देकर भी कोई बड़ी योजना को सरंजाम देना था। कल्याणदास बोला- पहले तो इस संस्था का नाम 'सेठ कल्याणदास अनाथालय' रख दें। दूसरे मेन हॉल के अंदर मेरा चित्र लगवा दें ताकि लोगों को पता लगे कि किसकी कृपा से ये काम चल रहा है।

संस्था के अधिकारियों के तो होश उड़ने लगे। फिर प्रधान ही बोला- देखिए, इस संस्था का नाम महान् संत कबीर के ऊपर रखा है। सेठ ने तो उसकी बात पूरी सुनी ही नहीं, बीच में बोल उठा- फिर आप जाइए और कबीर से ही चंदा ले आइए। सब सुनने वालों की बोलती बंद हो गई।

तभी संयोगवश सेठ कल्याणदास को मुनीम ने किसी फोन के सिलसिले में बुलवा लिया। संस्था के पदाधिकारियों को सलाह-मशविरा करने का टाइम मिल गया। उन्होंने निर्णय लिया कि उस अनाथाश्रम में पलने वाले बच्चों, बुजुर्गों एवं महिलाओं का गुजारा होना दूभर हो गया है। चंदा कहीं से मिल नहीं रहा। यदि नाम बदल भी जाए तो कम से कम अनाथों का जीवन तो बच जाएगा। अत: सेठ की शर्तें मानने में ही भला है। यद्यपि प्रस्ताव गलत है पर

2 पंचांग का मंगलकारी दिन अक्षय तृतीया

आगमज्ञाता गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.

ऋषभदेव का जन्म तब हुआ जब अवसर्पिणी काल का तीसरा आरा अंतप्रायः था। युगलिया काल दुविधा से ग्रस्त था। उस समय जीवन जीने की कला से सब अनभिज्ञ थे। न धर्म था और न कर्म। ऋषभदेव अवतार के रूप में जन्मे। पहले कर्म से परिचित करवाया। उस पीड़ित युग की समस्या का समाधान करने के लिए असि, मसि और कृषि का सरल रास्ता दिखाया।

आत्मरक्षा और राष्ट्र रक्षा के लिए हथियारों (असि) का कौशल सिखलाया। अज्ञानता के अंधकार को रौशन करने के लिए मसि का मार्ग दिखाया तथा भूख के निवारण के लिए कृषि सिखाई।

जीवन की सब व्यवस्थाएँ निर्धारित कर संन्यास का मार्ग चुना। जैन ग्रंथों के साथ-साथ भागवत पुराण में भी उनकी कठिन तपस्या का उल्लेख मिलता है।

चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन बेले की तपस्या के साथ दीक्षा ग्रहण की। तब से ही ऋषभदेव निराहार हैं। वर्षभर से ज्यादा समय हो गया, लेकिन आहार चर्या में प्रबल अंतराय कर्म का उदय आ रहा है। जीवात्मा मस्ती के लिए घोर कर्मों का बंधन कर लेती है। उन्हीं कर्मों का उदय होने पर आर्त्तध्यान करती है।

पर प्रभु तो आर्त्तध्यान से मुक्त हैं। वे तो अप्रमत्त होकर कर्मों की निर्जरा का आनंद ले रहे हैं। भोली जनता आहारचर्या से अनभिज्ञ है। वह प्रभु को हाथी, घोड़े, स्त्री, वस्त्र भेंट कर रही है। भोली जनता मूक इशारों को समझने में असमर्थ है। वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन ऋषभदेव हस्तिनापुर पधारे। बाहुबली के पौत्र श्रेयांस कुमार गत रात्रि में आए महान स्वप्न का फलितार्थ, गवाक्ष में बैठे-बैठे विचार कर रहे हैं। उसी समय ऋषभदेव का राजमार्ग पर आगमन हुआ। श्रेयांस की स्मृतियाँ अतीत में उतरते-उतरते जाति स्मरण ज्ञान तक पहुँच जाती है। उसी के आधार पर उन्होंने पारणा करवाया। इक्षु रस से पारणा करते ही अहोदानं-अहोदानं की दुंदुभि बजती है।

पंचम आरे के संहनन में इतना सामर्थ्य नहीं है कि लगातार तप कर सके। उन्हीं की याद में उनके अनुयायी चतुर्विध संघ के साधक और साधिकाएँ एक दिन व्रत अगले दिन पारणा, फिर व्रत। ऐसी तप आराधना करते हैं। यह वर्षीतप कहलाता है।

इस तप का प्रारंभ चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन होता है। अक्षय तृतीया के दिन इस तप की पूर्णाहूति की जाती है। संघशास्ता गुरुदेव ने इस तप की महिमा का खूब अनुमोदन किया है। चतुर्विध संघ के लिए उनकी प्रेरणा रही है। तपस्वी आत्माएँ तप कर महान् निर्जरा का लाभ प्राप्त करें। उनकी प्रेरणा स्वरूप ही सैकड़ों वर्षीतप गतिमान है। मुख्य वर्षीतप व्रतों का ही मान्य है लेकिन सामर्थ्य के अभाव में निर्जरा को लक्ष्य बनाकर आयंबिल या एकाशने का भी किया जा सकता है।

वर्षीतप साधक इन बातों का ध्यान रखें-

- मन में नाम की इच्छा न हो।
- भौतिक पदार्थों की लालसा मन में न रखे।
- ऋषभदेव की नित्य प्रति आरती करें।
- ऋषभदेव को भाव वंदन करें।
- निर्जरा के लक्ष्य को गौण न करें।
- वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया अक्षय तिथि है।

ज्योतिष गणितानुसार तिथियाँ चन्द्रमा की कला के अनुसार घटती-बढ़ती रहती हैं। जैसे दूज, चौथ, पंचमी, चौदस आदि परंतु आखातीज कभी घटी नहीं, क्षय नहीं हुई। इसलिए यह किसी भी कार्य के आरंभ का शुभ दिन है। इस दिन दान का विशेष महत्त्व है।

ऋषभ प्रभु की जयकार करो दिल से
वो जयकार सार्थक करो वर्षीतप से॥

पुस्तक समीक्षा

आओ! महावीर को घर ले चलें :

'आओ! महावीर को घर ले चलें'
पूज्य आगमज्ञाता योगिराज गुरूदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.सा. द्वारा लिखित
व दो भागों में प्रकाशित 620 पृष्ठों की यह पुस्तक कल्पवृक्ष समान है,
जो जीवन का समूचा कायाकल्प करने वाली है।
उपन्यास शैली में लिखी गई यह पुस्तक
Motivational Book है, जिसे पढ़ कर व्यक्ति की सोच, जीवनशैली और विचारधारा में सकारात्मक बदलाव आता है।
इसे स्वयं सहायता पुस्तक **(Self Help Book)** भी कह सकते हैं।
पुस्तक गुरूसेवक परिवार के तत्वावधान में रत्नत्रय प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित है।
(प्रस्तुति : संजीव जैन, करनाल)

3

धर्म के प्रतीकों को धर्म न समझें

- प्रवचन -

'मंगलाचरण :- साहू गोयम .... वंदन बारम्बार।।

भजन :- भगवान् मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।

अनन्त उपकारी गुरू म. के पावन चरण कमलों में रहकर हम जो कुछ भी ग्रहण कर सके हैं। कुछ देर आपके समक्ष रखेंगे।

भव्य जीव रत्नत्रय का आराधन करें, हमारी कोटिशः मंगल-कामनाएं हैं .....।

तीर्थं भगवन्तों की पावन और प्यारी वाणी धम्मों मंगलमुक्किट्ठ, अहिंसा संजमो तवो, देवावितं णमंसंति, जस्स धम्मे सयामणों।

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। जिंदगी में कुछ भी भूल जाना, परंतु धर्म को ना भूल जाना। दश्वैकालिक सूत्र की पहली ही गाथा है। अहिंसा और संयम एवं तप रूप धर्म को मंगलकारी कहा है। यहाँ पर जैन धर्म को मंगलकारी नहीं कहा है। अपितु अहिंसा प्राण है, संयम श्वास है और तप शरीर है। जिसमें दया नहीं वो धर्म नहीं हो सकता।

यह दया वाला धर्म पकड़ लो, जो धर्म को पकड़ता है वो आनंद को पकड़ता है। जो आनंद को पकड़ता है वो धीरे-2 मोक्ष को ही पकड़ लेता है।

आप दिगम्बर हो या श्वेताम्बर हो, प्रक्षाल करते हो या पूजा, सामायिक करते हो या शिखर जी की यात्रा, यह सब ऊपर की बातें हैं। ये धर्म नहीं धर्म तक जाने का रास्ता है। लेकिन इस युग की यह विड़म्बना है कि लोगों ने क्रियाकाण्ड़ों को ही धर्म समझ लिया है। ये सब धर्म के साधन हो सकते हैं। पर आन्तरिक साधना नहीं।

।। घर से मंदिर है बहुत दूर, चलो किसी रोते को हंसाया जाए।।

प्रतीकों को धर्म की वास्तविक परिभाषा ना समझें। धर्म की वास्तविक परिभाषा है - प्रेम। जहाँ प्रेम है वहाँ क्षमा है, जहाँ क्षमा है वहाँ शांति है, जहाँ शांति है वहाँ साधना है और साधना ही सिद्धत्व की राह है।

आगमों की भाषा में कहें तो 10 धर्मों को निज में उतारना ही धर्म का वास्तविक स्वरूप है।

भजन :- धर्म कल्याणकारी है, धर्म की महिमा भारी है
इसे तुम भुलाओ ना-2 .....।।

दिगम्बर परंपरा के आचार्य शांतिसागर जी संलेखनारूढ़ थे। उच्च या नीच जाति में जन्म लेने से कोई उच्च या नीच नहीं होता। वो महान् है, जिसके मन में शांति है, संस्कार है। आचार्यश्री जी शांति के स्वामी थे। शांत व्यक्ति ही संलेखनारूढ़ हो सकता है। संलेखना मतलब कषायों को पतला करना। और कषायों को पतला करने वाला ही संथारे की साधना में सफल हो सकता है। ... तो आचार्यश्री के

पास आकर, उनका ही अनुयायी कहने लगा - भगवन्! आपके बाद हमारा क्या होगा? दुनिया के अधिकांश प्राणी इसी भय से भयभीत हैं, कि हमारा क्या होगा? सुनो! मैं जा रहा हूँ। यहाँ कोई शाश्वत नहीं है। लेकिन जाते-2 तुम्हें हीरा देना चाहता हूँ - तुम क्षमा को पकड़ लो। धर्म सदा तुम्हारे करीब रहेगा। हमने मोबाईल को पकड़ा है। परिवार को पकड़ा है। पैसा भी पकड़ रखा है। लेकिन क्या क्षमा को भी पकड़ा है?

भजन :-

ले लो धर्म शरण, नहीं और शरण कोई।
सारी आफत टले, सारी विपत्ति हटे,
नहीं दुःख हरण कोई।।

यदि धर्म करते-करते आपकी भाषा में परिवर्तन होने लगे, व्यवहार सबको सुहाने लगे, वृत्तियों में चेंज होने लगे तो समझ लेना आप सही रास्ते पर चल रहे हो, अन्यथा मान लेना आप कर्मकाण्ड़ी बनकर जी रहे हो।

ऐसा हुआ लड़के वालों की ओर से लड़की वाले पक्ष को फोन किया गया - ''जब हम बारात लेकर आएँ तो फलां-2 आईटम खाने में हो'' 70 प्रकार की वस्तुओं का मैन्यू थमा दिया। बारात आई। आते ही बारातियों को पानी नहीं मिला। बारात में आने वाले दामाद और फूफे मचल उठे।

ये दामाद और फूफे होते ही मचलने के लिए हैं।

मामला गर्म होने लगा तब लड़के के पिता ने लड़की के पिता को शिकायत के भाव से कहा - आपने पानी क्यों नहीं रखवाया? लड़की का पिता कहने लगा - समधी जी! पहले अपना दिया मैन्यू पढ़ लो।

बस! यही आपको समझाना चाहता हूँ - हम सब कुछ करते हैं, पर जो सबसे जरूरी है, उस धर्म को भूल जाते हैं।

बंधुओं! धर्म के लिए शेष नहीं विशेष समय निकालो

भजन :-धर्म करे उद्धार सब अपनाओ .....

आज आपको **Home work** दे रहा हूँ 11-11 लोगों को जाकर बोलना- ''जो जीवन को सुधार दे, वो सच्चा धर्म है।

होता है - होता है....

तुझ मे ये ऐब है कि खूबी है, जो तुझे देख ले तेरा हो जाए।

खुद को ऐसी जगह छुपाया है, कोई ढूंढे जो लापता हो जाए।

4 भारतीय इतिहास के विस्मृत महानायक

राणा सांगा

(शासन काल सन् 1509-1528)

राणा सांगा (महाराणा संग्राम सिंह / 12 अप्रैल, 1484 से 30 जनवरी, 1528) उदयपुर में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे। इन्होंने अपनी शक्ति के बल पर मेवाड़ साम्राज्य का विस्तार किया और उसके तहत पूरे राजपूताना के सभी राजाओं को संगठित किया। राणा रायमल की मृत्यु के बाद सन् 1509 में राणा सांगा मेवाड़ के महाराणा बने। राणा सांगा सही मायनों में एक वीर योद्धा और शासक थे, जो अपनी वीरता और उदारता के लिए प्रसिद्ध हुए। इन्होंने दिल्ली, मालवा और गुजरात के मुगल बादशाहों के आक्रमणों से अपने राज्य की रक्षा की।

उस समय के वे सबसे शक्तिशाली राजा थे। कहा जाता है कि अपने जीवन काल में उन्होंने 100 लड़ाइयां लड़ी थी। वे इतने वीर थे कि लड़ाइयों में एक हाथ, एक आंख और एक पैर खोने के बाद भी उनके पराक्रम में कोई कमी नहीं आई थी। उनका साम्राज्य दक्षिण में मालवा से लेकर पंजाब में सतलज तक तथा पश्चिम में सिंधु से लेकर पूर्व में बयाना, भरतपुर, ग्वालियर तक विस्तीर्ण था। लगभग 150 वर्ष के मुस्लिम सुल्तानों की सत्ता के बाद भी इतना बड़ा हिन्दु साम्राज्य राणा सांगा ने स्थापित किया।

21-22 फरवरी, 1527 ई. बयाना का युद्ध : महाराणा सांगा व मुगल बादशाह बाबर के बीच हुई इस लड़ाई में महाराणा सांगा ने विजय प्राप्त की। महाराणा सांगा ने बयाना दुर्ग पर कब्ज़ा कर लिया। महाराणा ने बयाना विजय से रण कंकण, वर्दी, वितान, कनातें वगैरह जब्त किये।

मार्च, 1527 ई. में खानवा का युद्ध हुआ। राणा सांगा वीरता से लड़े। उनके शरीर पर अस्सी घाव थे, फिर भी वे लड़ने के लिए तैयार थे। आखिर में उन्हें ज़बरदस्ती रणभूमि से उठाकर एक किसान की झोंपड़ी में लाया गया, जहां षडयंत्रपूर्वक उन्हें जहर दे दिया गया, जिसके कारण चित्तौड़ में 30 जनवरी, 1528 को उनकी मृत्यु हो गई।

अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में बाबर लिखता है-

'हमारी फतह दिल्ली, आगरा, जौनपुर वगैरह पर हुई। हिन्दु, मुसलमान, सबने हमारी ताबेदारी कुबूल की। सिर्फ राणा सांगा ने सब मुखालिफों का सर-गिरोह बनकर सिर फेरा। वह विलायत हिन्द में इस तरह गालिब था कि जिन राजा और रावों ने किसी की ताबेदारी नहीं की थी, वे भी अपने बड़प्पन को छोड़ कर उसके झण्डे के नीचे आए। 200 मुसलमानी शहर उसके काबू में थे। मस्जिदें उसने खराब कर डाली थीं। कायदा विलायत के मुताबिक उसका मुल्क 10 करोड़ रुपये सालाना आमदनी को पहुंचा था। बड़े-बड़े नामी सरदार इस्लाम की अदावत में उसके साथ थे। ये सब राणा सांगा के झण्डे तले इस्लाम के विरुद्ध चढ़कर आए।'

अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में एक दूसरे स्थान पर बाबर पुनः लिखता है-

'राणा सांगा अपनी वीरता और तलवार के बल पर अत्यधिक शक्तिशाली हो गया है। उसका राज्य चित्तौड़ में था। मांडू के सुल्तानों के पतन के बाद उसने बहुत से स्थानों पर अधिकार जमा लिया। उसका मुल्क दस करोड़ की सालाना आमदनी का था। उसकी सेना में एक लाख सवार थे। उसके साथ 7 राव और 104 छोटे सरदार थे। उसके तीन उत्तराधिकारी भी यदि उसके जैसे वीर होते तो मुगलों का राज्य हिन्दुस्तान में जमने न पाता।'

बयाना के युद्ध के एक माह बाद महाराणा सांगा व बाबर के बीच फिर युद्ध हुआ। महाराणा सांगा यदि बयाना विजय के तुरन्त बाद एक हमला बाबर की फौज पर और करते, तो सम्भव था कि खानवा का युद्ध ही न होता, क्योंकि उस वक्त बादशाही फौज के हौंसले पस्त थे।

5 जिज्ञासा और समाधान

प्रश्न : दिवंगत महापुरुषों का जयनाद करना क्या अनागमिक और मिथ्यात्व पोषक माना जाए?

उत्तर- जैन धर्म में मुक्ति के तीन उपाय बताए हैं- सम्यक्-दर्शन, ज्ञान और चारित्र। यहाँ दर्शन का अर्थ है- भक्ति।

वर्तमान काल में जैन समाज की स्थिति कुछ इस प्रकार की हो गई है कि उससे भक्ति की धारा लुप्तप्रायः होती जा रही है। केवल शुष्क ज्ञान के मरुस्थल में जैन मुनियों का विहरण होता प्रतीत हो रहा है, जबकि मूलतः ऐसा नहीं था। जैन धर्म में स्वार्थ-मूलक भक्ति का विरोध था, पर समर्पण-प्रधान गुणस्तुतिमय भक्ति का नहीं। शक्रस्तव, चतुर्विंशतिस्तव, नंदीसूत्र की 50 गाथाएँ, तीर्थंकर प्रकृति के 20 बोलों में प्रारंभिक भक्तियाँ इस तथ्य को पुष्ट करती हैं।

भक्ति के तीन प्रस्थान बिंदु हैं- देव, गुरु और धर्म। देव और धर्म की स्तुति को स्वीकार करने वाले चिंतकों को गुरुभक्ति भी स्वीकरणीय होनी ही चाहिए। जिन गुरुओं से देव, धर्म की निकटता मिली, उन गुरुओं के गुणानुवाद, जयनाद करने से

दर्शन-विशुद्धि होती है।

गुरुदेव चाहे जीवित हों या दिवंगत, सदैव शिष्य के हृदय में विराजमान होते हैं। शिष्य गुरु के उस रूप का ध्यान, गुणगान करता है जिस रूप में गुरु ने उसे सम्यक् ज्ञानादि प्रदान किए हैं।

वह दिवंगत गुरु का इन शब्दों में गुणगान नहीं करता है कि देवलोक में विराजमान, चतुर्थ-गुणस्थानवर्ती, वैक्रिय शरीरधारी गुरु की जय हो या वंदना हो। महाव्रत पालन करने वाली उनकी छवि ही शिष्य के मन में अवतीर्ण होती है। जीवित अवस्था में भी वह उनके गुणों की वंदना करता रहता है और दिवंगत होने पर भी गुणों की ही वन्दना करता है, वह अपनी प्रार्थना या भक्ति- स्तवनों में उन गुणों का वर्णन करता है, जिससे वह प्रभावित रहा है। यथा- आप समता के सागर थे, चरित्र पूज्य थे, तपस्वी थे, कषाय-विजेता थे आदि। वह उन स्तुति पदों में ऐसे शब्द प्रयुक्त नहीं करता कि आप देवियों से घिरे हुए हो, दिव्य-सुख के भोक्ता हो, विमानाधिपति हो, आपको मेरी वंदना, आपकी जय हो। उसे तो ये भी ज्ञात नहीं कि मेरे गुरुवर किस गति में है, किस आकार -प्रकार के हैं।

न केवल दिवंगत गुरु के संबंध में वह अनभिज्ञ है, अपितु जीवित अवस्था में भी वह नहीं जानता कि मुझे शिक्षा-दीक्षा देने वाले गुरु भव्य हैं या अभव्य हैं, सम्यक् दृष्टि हैं अथवा मिथ्यादृष्टि हैं, द्रव्य-संयमी हैं या भाव-संयमी हैं। वह अपने हृदय से उन्हें गुरु मानता है तो उसे उस भक्ति का फल मिलता है, न कि उसे मिथ्यात्व का दोष लगता है।

नंदीसूत्र में आचार्य देवर्धिगणी ने प्रभवस्वामी से लेकर दूष्यगणी तक की वंदना की, उनकी जयकार की है। इनमें से आचार्य मंगू के संबंध में तो पश्चाद्वर्ती कथाकारों ने विराधकता का आरोप भी लगाया है। उनके लिये कहा गया है कि वे काल करके निम्न जाति के व्यन्तर देवता बने। लेकिन आचार्य देवर्धिगणी ने उनके जिन गुणों को वंदना की है, वे हैं- "भणगं करगं झरगं पभावगं णाण-दसंणगुणाणं।"

इससे न तो आचार्य देवर्धिगणी की सम्यक्त्व खंडित हुई, न हजारों नंदीपाठ-कर्ताओं की भग्न हो रही है।

सम्यक्त्व का खतरा उन्हें हैं, जो गुरुभक्ति करते-करते सिकुड़ जाते हैं; जैसे- निह्नवों की चर्चा में आया है कि एक गुरु ने अपने मृत शरीर में प्रवेश करके मुनियों को पढ़ाया, अपने शिष्यों की वंदना ली। बाद में अपनी गलती के लिए क्षमायाचना की और कहा कि मैं देव हूँ, मुनियों की वंदना का अधिकारी नहीं हूँ, पर ये नहीं कहा कि तुम्हें दोष लगा, तुम दंड लो। पर वे बहक गए, परस्पर वंदना छोड़ दी, तब उन्हें मिथ्यात्व का उदय हुआ। गुरु के स्वरूप को वंदना न करना, जयकार को रोकना मिथ्यात्व है, न कि वंदना और जयनाद।

खुद को मनवाने का, मुझको भी हुनर आता है।
मैं वह कतरा हूँ, समंदर मेरे घर आता है।

सुख सबको अभीष्ट है, दु:ख किसी को नहीं। दु:ख में भय, अशान्ति, उद्विग्नता आदि का अनुभव होता है, जबकि सुख में इनका पराभव होता है। सुख के प्राय: तीन रूप हैं-

1. पौद्गलिक सुख, 2. प्रशमसुख, एवं
3. अव्याबाध सुख

पुद्गल पदार्थों की प्राप्ति या उनके सेवन आदि से होने वाला सुख पौद्गलिक सुख है।

क्रोध, मान, माया एवं लोभ में कमी आने पर जिस सुख का अनुभव होता है, वह प्रशम सुख है।

जो सुख एक बार प्राप्त होने के पश्चात् कभी बाधित न हो उसे अव्याबाध सुख कहते हैं। यह सुख मात्र सिद्धों को ही प्राप्त होता है। वे आठों कर्मों से रहित होते हैं, अत: उनके लिए दु:ख का कोई कारण ही नहीं रह जाता है।

स्थानांग सूत्र के दशवें स्थान में सुख के 10 प्रकार निरूपित हैं-

आरोग्ग दीहमाउं अड्ढेज्जं काम-भोग संतोसे।
अत्थि सुहभोग णिक्खम्ममेव तत्तो अणबाहे।।

दशविध सुखों के नाम हैं- 1. आरोग्य (स्वस्थता), 2. दीर्घायु, 3. आढ्यता (समृद्धि), 4. काम (शब्द एवं रूपजन्य सुख), 5. भोग (गन्ध, रस एवं स्पर्श जन्य सुख), 6. सन्तोष, 7. अस्ति (परिवारजन, धन-सम्पत्ति, बैंक बैलेंस आदि के होने का सुख अथवा आस्था एवं श्रद्धा का सुख), 8. शुभ भोग, 9. निष्क्रमण (प्रव्रज्या-ग्रहण), 10. अव्याबाध।

इन दस प्रकार के सुखों में सन्तोष को छोड़कर प्रारम्भिक आठ प्रकार के सुख पौद्गलिक सुख से सम्बद्ध हैं। सन्तोष एवं निष्क्रमण सुख का समावेश प्रशम सुख में होता है तथा अनाबाध या अव्याबाध सुख तो मुक्ति का सुख है।

पौद्गलिक सुख शरीर, इन्द्रिय एवं मन से सम्बद्ध है, किन्तु इसका प्रभाव चेतना पर भी पड़ता है। शरीरादि में आरोग्य का होना उसी प्रकार महत्त्वपूर्ण है, जिस प्रकार कि मनुष्य जन्म का प्राप्त होना। रोगग्रस्त शरीर धर्म-साधना में भी बाधक सिद्ध होता है। वह भोगों के लिए भी अनुपयुक्त होता है। इसलिए भोगी एवं योगी दोनों को आरोग्य अभीष्ट है।

**पौद्गलिक सुख शरीर
इन्द्रिय एवं मन से सम्बद्ध है
किन्तु इसका प्रभाव
चेतना पर भी पड़ता है।
शरीरादि में आरोग्य का होना
उसी प्रकार महत्त्वपूर्ण है
जिस प्रकार कि मनुष्य जन्म का
प्राप्त होना।
रोगग्रस्त शरीर
धर्म-साधना में भी
बाधक सिद्ध होता है।
वह भोगों के लिए भी
अनुपयुक्त होता है। इसलिए भोगी एवं
योगी दोनों को आरोग्य अभीष्ट है।**

'दीर्घायु' का होना सुखद मात्र इसलिए हो सकता है कि सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, अन्यथा कुछ योनियों में तो अल्पायु होना ही अधिक सुखद लगता है।

आढ्यत्व, काम, भोग आदि का सुख भोगियों को अभीष्ट है। 'अत्थि' (अस्ति) शब्द का अर्थ 'आवश्यक वस्तु की तत्काल पूर्ति' होना किया जाता है, किन्तु यह शब्द उस सुख को इंगित करता है जो परिवारजन, धन, धान्य, पद, प्रतिष्ठा आदि के होने से अनुभव में आता है। वह सोचता है कि मेरे पास धन है, पत्नी है, बन्धुजन हैं, बैंक बैलेंस। इस प्रकार इनके होने का सुख अत्थि सुख है। इसका दूसरा अर्थ आस्तिक्य, आस्था या श्रद्धा भी किया जा सकता है। देव, गुरु धर्म पर श्रद्धा का अपना सुख है। उसके कारण व्यक्ति अनेक चिन्ताओं से मुक्त हो जाता है।

इसी प्रकार 'सुहभोग' शब्द भी विचारणीय है। इसका अर्थ शुभ भोग किया जाता है, किन्तु काम-भोग को पृथक् रूप से गिना देने के पश्चात् 'शुभ भोग' का कथन युक्ति संगत प्रतीत नहीं होता।

'सुहभोग' के स्थान पर सम्भव है कभी 'सुहयोग' शब्द रहा हो। 'सुहयोग' का तात्पर्य है- शुभयोग। शुभ-योग भी सुखद अनुभव में आता है। इसलिए यह भी सुख रूप है। दूसरी बात यह है कि 'संतोष' जैसे 'प्रशम सुख' का कथन करने के पश्चात् पुनः भोगों के सुख का कथन करना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। 'अत्थि' का अर्थ आस्तिक्य (आस्था, श्रद्धा) एवं 'सुहभोग' के स्थान पर 'सुहयोग' शब्द होने पर 'शुभयोग' अर्थ युक्ति संगत लगते हैं।

ऐसी स्थिति में 'सन्तोष' 'आस्तिक्य' एवं 'शुभयोग' का ग्रहण 'प्रशमसुख' में हो सकेगा।

'प्रशम' शब्द कषाय के शमन का द्योतन करता है। आचार्य उमास्वाति ने प्रशम का अर्थ वैराग्य करते हुए उसके अनेक पर्यायवाची दिए हैं, यथा-

माध्यस्थ्यं वैराग्यं विरागता,
शान्तिरुपशमः प्रशमः।
दोषक्षयः कषायविजयश्च वैराग्यपर्यायाः।।

- प्रशमरतिप्रकरण, 117

अर्थात्, माध्यस्थ्य, वैराग्य, विरागता, शान्ति, उपशम, प्रशम, दोषक्षय और कषायविजय, ये सब वैराग्य के पर्याय हैं।

'प्रशम' शब्द से विशेषतः कषाय-शमन या कषाय-विजय का बोध होता है। प्रशम-सुख का अनुभव वही कर सकता है जो कषाय-विजेता है। क्रोधादि कषायों या राग-द्वेष में जितनी अधिक कमी होगी, उतना ही अधिक प्रशमसुख का अनुभव होगा।

प्रशमसुख का अनुभव तभी हो सकता है जब पुद्गलजन्य विषय-सुख से विमुखता हो। जो विषयसुखों में गृद्ध हैं, उनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हैं, उन्हें 'प्रशमसुख' के स्वाद का बोध नहीं रहता। उन्हें लगता है कि विषय-सुखों के भोग के बिना सुख की कल्पना निरर्थक है, किन्तु उनका यह मन्तव्य उचित नहीं है। क्योंकि वैषयिक सुखों में प्रायः काम-भोग (पाँचों इन्द्रियों) से होने वाला सुख क्षणिक एवं उबाऊ होता है। दूसरी बात यह है कि यह जड़ता एवं पराधीनता से युक्त है। तीसरी बात यह है कि इस सुख की लोलुपता व्यक्ति को मिथ्यात्वी बनाये रखती है।

(क्रमशः)

प्रकोष्ट : 3 : परिचय

7 समर्पित व्यक्तित्व श्री मनीष जैन

धर्मनिष्ठ श्रावक श्री अशोक जैन एवं वर्षीतप साधिका श्राविका श्रीमती वीना जैन के ज्येष्ठ सुपुत्र मनीष जैन, समर्पण भरी श्रद्धाओं के कारण अग्रणी युवा, गुरु भक्तों में जाने जाते हैं। 2 मई, 1981 को आपका जन्म हुआ। सन् 2006 से आपका संपर्क पूज्य गुरुदेव श्री अरुणचंद्र जी म.सा. के साथ हुआ। गुरुदेव के दिल में आपका स्थायी स्थान है, इसके बहुत से कारण हैं, लेकिन प्रमुख कारण है- आप गुरुदेव की हर आज्ञा पर नतमस्तक होते हैं। गुरु सेवक परिवार के सहकोषाध्यक्ष के पद रहकर आपने कीमती सहयोग दिया। अब मेट्रोमोनियल विभाग के साथ-साथ गुरु सेवक परिवार युवक मण्डल के प्रधान पद पर आसीन हैं। श्राविका रचना जैन एवं शुभम् व हीरक; यह आपका धर्मनिष्ठ परिवार है।

आपके लिए शुभकामनाएँ दिल से.... खुश रहो, खूब फलो...

8 लाड़ली गुड़िया ईरा जैन

गुरूओं की लाडली एक ऐसी गुड़िया, जिसके जन्म, नामकरण में विद्वद्रत्न गुरूदेव श्री जयमुनि जी एवं आगम ज्ञाता गुरूदेव श्री अरुणचन्द्र जी म. का मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त है। क्रॉसिंग रिपब्लिक में रहने वाली यह बच्ची श्रीमती शशि विजय जी जैन (होशियारपुर वालों) की पोती एवं श्रीमती सपना महक जी जैन की पुत्री है। वह अपने चाचा अमित जी, चाची स्वाति, भाई अर्हन् की भी अत्यंत प्रिय है।

एक गुरूभक्त, गुरू समर्पित परिवार के कुल की बिटिया होने के साथ-साथ गुरूओं की मीराबाई श्रीमती पूनम शीलचन्द जी जैन की धेवती एवं गुरूओं के हनुमान आशीष जैन जी की भांजी होने का गौरव विरासत में मिला। आशीष जैन जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्राविका श्रीमती प्रिया जी, लाडला निश्चय जैन (चिन्मय जैन) भी उसे अपनी पुत्री एवं बहन के रूप में ही देखते हैं।

विद्वद्रत्न एवं आगमज्ञाता गुरूदेव के आशीर्वाद स्वरूप गुड़िया की वाक्पटुता, ज्ञान उत्सुकता बुद्धि वृद्धि नित रोज उन्नत है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण गाजियाबाद प्रवचन सभा में पंजाबी भजन गायन के रूप में देखने को मिला। गुरूओं के गुणगान हेतु भक्ति भजन, नवकार मंत्र, गुरू मंगलाचरण, स्तुति, सामायिक इत्यादि का नित्य अभ्यास अपनी नानी से प्रेरणा स्वरूप विरासत में मिला है।

गुरूओं की अपार कृपा समय-समय पर दर्शन के रूप में मिलती रहती है।

अपने नाम के अर्थ समकक्ष सदैव प्रेम और शांति का संचार करे, यही मंगलकामना है।

9

Little and lovely baby

श्री संजीव जैन और श्राविका ऋचा जैन की प्यारी सुपुत्री का नाम है **प्रियल जैन**

यह सबके दिल को अपनी मनोहारी बातों से मोहित करने में माहिर है। गुलाब वाटिका में पधारने वाले मुनिराजों को यह अपना बना ही लेती है। साध्वी वर्ग के हृदय में इसका विशेष स्थान है। इसका अरमान है- मैं बड़ी होकर दीक्षा लूं।

यह लाडली बालिका परम प्रसन्न रहे। हार्दिक शुभकामना... अरमान वरदान बने...।

10

गुरूभक्त और भ्राता श्री अंकुर व निखिल जैन

श्री प्रमोद व श्रीमती रेखा जी के सुपुत्र अंकुर व निखिल जैन सेवाभावी गुरूभक्त हैं। दिगम्बर आम्नाय का यह परिवार गुरूदेव के प्रति दिल से समर्पित है। सन् 2007 में यह कृपापात्र बने थे। तब से निरंतर गुरूदेव के दिल को जीत रहे हैं। आप सफल बनें, संस्कारी बनें, सुखी व सिद्ध बनें, यही हार्दिक शुभकामना।

कथनी और करनी

'सर, आप हमें जो करने की सलाह देते हो उसका अमल आप खुद ही नहीं करते।'

'ऐसा तुम किस आधार पर कह सकते हो?'

'सर, आपने ही कहा था ना कि मुश्किल में एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए।'

'तो बराबर ही है ना?'

'लेकिन सर, परीक्षाखंड में हम जब पेपर लिखने बैठते हैं तो न तो आप हमारी सहायता करते हैं न ही हम विद्यार्थियों को एक-दूसरे की सहायता करने देते हैं।'

11

आरोग्य की कुंजी

– रुचिका जैन, जीवन शैली विशेषज्ञ

एंटीबायोटिक्स का असर

पिछली बार हमने गट हेल्थ पर विस्तार से चर्चा की। अच्छे बैक्टीरिया और बुरे बैक्टीरिया का हमारी गट हेल्थ पर प्रभाव जाना। इस बार हम एंटीबायोटिक्स के दुष्प्रभाव के बारे में बात करेंगे।

जिस तरह जंगल की आग छोटे-बड़े पेड़-पौधों से लेकर जीव-जंतुओं तक को नष्ट कर देती है, वैसे ही एंटीबायोटिक्स आँतों में पाए जाने वाले अच्छे और खराब सभी तरह के अधिकांश बैक्टीरिया को खत्म कर देते हैं। आग के बुझने के बाद सबसे पहले खरपतवार पैदा होती है और सब जगह उगती है। ठीक वैसे ही एंटीबायोटिक्स का कोर्स खत्म होने पर आँतों में कम लाभदायक बैक्टीरिया पहले पनपते हैं और पूरी आँत में फैल जाते हैं। इससे पाचन के लिए कम फायदेमंद तंत्र तैयार होता है। इसी तंत्र को माइक्रोबायोम (Microbiome) कहते हैं। अरिल एंटीबायोटिक्स के सेवन के दौरान कुछ अच्छे बैक्टीरिया आँतों में ऐसी जगह छिप जाते हैं, जहाँ एंटीबायोटिक्स का असर नहीं पहुँचता। ऐसे में हम खाने में ऐसी वस्तुएँ शामिल करें जो कि हमारी आँतों के माइक्रोबायोम को तेजी से दोबारा बना सके।

खमीर युक्त भोजन – खमीर युक्त भोजन जैसे दही, छाछ, कांजी, इडली, डोसा, कैफीर, कबूंचा आदि में विभिन्न प्रकार के लाभदायक बैक्टीरिया होते हैं। चावल की कांजी (मिट्टी के बर्तन में रात भर चावल रखकर सुबह पानी समेत चावल) खाएँगे, वह हमारे गट बैक्टीरिया को अच्छे से बैलेंस करेगी।

अदरक – अदरक में कुछ ऐसे रसायन, जैसे कि जिंजरोल (gingrol) पाए जाते हैं, जो मस्तिष्क और नर्वस सिस्टम को मितली (vomiting) को नियंत्रित करने में मदद करती है। ऐसे में यह एंटीबायोटिक्स के कारण होने वाली मितली, गैस और पेट में सूजन को कम करने में मदद करता है।

फाइबर युक्त भोजन – फाइबर युक्त भोजन पाचन तंत्र के लिए जरूरी बैक्टीरिया की विविधता बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके लिए भोजन में केला, प्याज, लहसुन, ओट्स, शतावरी, दालें आदि शामिल करें। यह फाइबर का अच्छा स्रोत है। अगर एंटीबायोटिक्स को लेने के बाद गैस, दस्त या सूजन हो रही हो तो अधिक फाइबर वाले फूड को डाइट में धीरे-धीरे शामिल करें।

प्रोबायोटिक्स – आप अपने डॉक्टर या डाइटिशियन की सलाह से प्रोबायोटिक्स सप्लीमेंट्स भी ले सकते हैं। इसके स्पष्ट नुकसान तो नहीं पर फिर भी विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार उचित मात्रा में ले सकते हैं। इससे एंटीबायोटिक्स के साथ होने वाली कमजोरी से बचा जा सकता है।

एंटीबायोटिक्स को लेना कभी बहुत आवश्यक होता है। संक्रमण के इलाज के लिए इसको तयशुदा मात्रा में नियमित खुराक लेना आवश्यक होता है। एंटीबायोटिक्स का उपयोग बैक्टीरिया के

इलाज के लिए किया जाता है न कि वायरल संक्रमण जैसे कि सामान्य सर्दी या फ्लू आदि।

अगर हम अपनी रोग प्रतिरोधक शक्ति यानी कि इम्युनिटी को ठीक रखेंगे तो छोटे-मोटे संक्रमण से हमारा शरीर खुद ब खुद लड़ लेगा। हमारा इम्यून सिस्टम एक आर्मी की तरह हमारे सिस्टम की सुरक्षा करता है और हम सही खान-पान, व्यायाम, अच्छी नींद और तनाव रहित रह कर उसे मजबूत कर सकते हैं। एक अच्छी जीवन शैली अपना कर हम शरीर को तंदरूस्त रख सकते हैं।

12

चमत्कारी घरेलू नुस्खे

सफेद दाग

- कालीमिर्च को नींबू या सिरके में पीस कर दाग पर लगाएँ।
- चने के आटे की रोटी बिना नमक लम्बे समय तक खाएँ।
- अंजीर को नींबू या सिरके में घिसकर दाग पर लगाएँ।
- छाछ, लहसून, बथुआ, अखरोट लाभदायक।
- मूली के बीज सिरके में पीसकर लगाएँ।
- नमक, मिर्ची, गुड़, तेल व खट्टी चीजें हानिकारक।

काले दाग

- कपूर व केसर को घिसकर लगाएँ।
- हल्दी को नींबू के रस में घिसकर लगावें।
- आँख के नीचे का कालापन मिटाने के लिए बादाम का तेल हल्के हाथों से कुछ दिन लगाएँ।

रक्त अल्पता

- सोने के आधे घण्टे पहले सेब का रस पियें।
- केला खाएँ।
- खजूर, बादाम, शहद का प्रयोग करें।
- मेथी, चना, भींडी, सोयाबीन, पालक लेवें।
- संतरे का नियमित सेवन रक्तवर्धक है।
- नित्य दही का प्रयोग करें।
- अखरोट व बादाम लाभदायक।

13

मित्रों का अभिनय

चार मित्रों की आपस में जोरदार गोष्ठी चल रही थी। एक का नाम क्रोध था, वह बोला- मैं क्रोध हूँ, मेरा निवास स्थान कपाल में है। दूसरा मित्र मान बोला- मैं मान हूँ, मेरा निवास स्थान गर्दन में है। तीसरे मित्र माया ने कहा- मैं माया राम हूँ, मेरा निवास स्थान पेट में हैं। चौथा मित्र लोभ क्यों चुप रहता। वह बोला- मैं पाप का बाप लोभ हूँ, मेरा स्थान शरीर के प्रत्येक रोम-रोम में है।

चारों की बातें सुनकर आत्माराम सेठ की हार्टबिट चढ़ गई, वह घबराकर बोला- मैं कहां जाऊँ, ये पाप मित्र तो मेरी दुर्गति कर देंगे, मुझे बचाओ। तभी श्रद्धामयी, प्रेममयी, वात्सल्यमयी, धर्मवती, पुण्य सहायिका, पाप परिहारिका, कल्याण कारिका चार धर्म देवियाँ वहाँ पर उपस्थित हुईं, सेठ को प्रणाम करके पूछने लगी, सेठ आप क्यों घबराते हो? आपको क्या परेशानी है?

सेठ ने चार पाप मित्रों की सारी वार्ता उन देवियों को कह सुनाई। सेठ बोले- इन चार मित्रों ने मेरे सारे शरीर पर अधिकार जमा लिया है, अब मेरा क्या होगा?

देवियां - सेठ घबराओ नहीं! हमें अपने घर में घुसने दो। ये चारों पाप मित्र नौ दो ग्यारह हो जायेंगे।

सेठ - अच्छा! तो पधारिये आपका स्वागत सुस्वागत।

सेठ - आप कौन हो?

देवी - मैं प्रथम देवी क्षमा हूँ।

सेठ - आपका निवास कहाँ है?

देवी - मेरा निवास तो कपाल में है।

सेठ - अरे वहीं तो क्रोधरूपी पाप मित्र अपना अड्डा बनाए बैठा है।

देवी - सेठ जी! आप चिंता छोड़िए। जहाँ क्षमा देवी पधारती हैं, वहाँ से क्रोध रूपी चाण्डाल भाग जाता है।

सेठ - अच्छा! तो आप शीघ्र पधारिये।

देवी का आगमन हुआ क्रोध वहाँ से भाग गया।

सेठ - आप कौन हैं?

दूसरी देवी - मेरा नाम नम्रता है। मैं गर्दन में रहूँगी।

सेठ - देवी वहाँ तो मान ने पहले से ही अपना अड्डा जमा रखा है।

देवी - सुनिए सेठ जी! जहाँ नम्रता देवी पधारती है, वहाँ से मानरूपी शत्रु भाग जाता है।

सेठ - अच्छा ऐसा है तो आप पधारिए आपका अभिनंदन है।

देवी - सेठ जी! मैं सरलता देवी हूँ मेरा निवास पेट में है।

सेठ - पेट में तो माया रहती है। वहाँ आप कैसे टिक पायेंगी?

देवी - सेठ जी! आप घबराएँ नहीं। मेरे प्रवेश करते ही पेट से माया ऐसे भाग जाती है, जैसे सिंहनी के सामने से गीदड़ भागते हैं।

सेठ - पधारो देवी! सरलता आपका स्वागत है। सेठ जी चौथी देवी से पूछते हैं- देवी! आप कौन

हैं?

देवी – मैं संतोषी देवी हूँ, मेरा स्थान तो आपके शरीर के रोम-रोम में है।

सेठ – लेकिन मेरे तो रोम-रोम में पहले से ही लोभ का वास है, फिर आप वहाँ कैसे रह पायेंगी?

देवी – सेठ जी! अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना तो ठीक नहीं, हाथ कंगन को आरसी क्या? आप मुझे आज्ञा दीजिए। मेरे भीतर आते ही चमत्कार देखियेगा।

सेठ – पधारिये माँ संतोषी देवी! आपका स्वागत है सुस्वागत है।

रूमझुम करती हुई नाचती हुई संतोषी देवी ने सेठ के अंग-अंग में, रोम-रोम में प्रवेश कर लिया।

सेठ – अरे वाह! यह कैसा चमत्कार घटित हो गया। आपके भीतर पधारते ही लोभ लालच कोसों दूर पलायन कर गये हैं। अहा! मेरे भीतर दिव्य प्रकाश बढ़ता ही जा रहा है। मेरे भीतर साधनों की दिव्य सुगन्ध फैल रही है। मैं प्रकाश सुवास से भरता जा रहा हूँ। मेरा जीवन धन्य हुआ, मैं सुख और आनंद को उपलब्ध हुआ हूँ। जैसा सुख मुझे मिला, वैसा सबको मिले शुभ मंगल हो, शुभ मंगल हो।

14

अरिहंत वर्णमाला

JUST FOR KIDS

थ थलचर

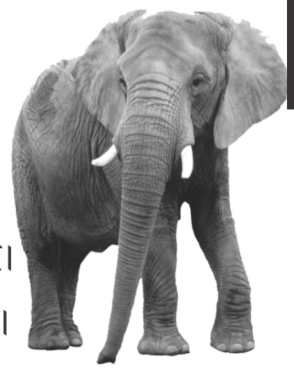

थलचर के चार भेद, एक खुर दो खुर।
संडीपद ने गंडीपद, ज्ञानी कहते जरूर।

थलचर – पृथ्वी पर चलने वाले पंचेन्द्रिय जीवों को स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहते हैं। इनके चार भेद हैं- सन्नी, असन्नी, पर्याप्त, अपर्याप्त।

स्थलचर के 4 भेद हैं- एक खुर = गधा, घोड़ा। दो खुर = गाय, बकरा। गंडीपद = गोल पैर वाले, जैसे हाथी, गेंडा। संडीपद = तीखे नाखुन वाले, जैसे शेर, चीते आदि।

असन्नी स्थलचर पंचेन्द्रिय की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट प्रत्येक गाऊ, आयुष्य = जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट 84 हजार वर्ष का है।

सन्नी स्थलचर पंचेन्द्रिय की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट 6 गाऊ, आयुष्य जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट 3 पल्योपम का।

16

पीड़ित पशुओं की सभा

एक खेत में एक किसान हल जोत रहा था। तीन बीघा जमीन जोत चुकने पर भी किसान ने बैलों को नहीं छोड़ा, और अधिक चलाने के लिये बाध्य करने लगा। परन्तु बैलों के पैर न उठते थे। तमाम शरीर दिन भर के परिश्रम से क्रान्त हो गया था, भूख भी बड़े जोर से लग रही थी, पर कृषक को दया न आई। स्वार्थ और लोभ जो सिर पर सवार था। वह बैलों को डंडे से पीटने लगा। उस पर भी उन्हें चलते न देख उसमें लगी तीक्ष्ण आर बैल की कूख में निर्दयतापूर्वक घुसेड़ दी। बैल तड़प उठा, खून की धारा बड़े वेग से बह चली। वह धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ा।

एक मदमस्त हाथी पर स्वर्णमय हौदा सजाया गया, बहुत कीमती कारचोबी कपड़ा ओढ़ाया, चांदी की घंटी लटकाई और पुष्पहारों तथा अनेक प्रकार की चित्रावली से गजराज को सुशोभित किया गया। क्योंकि उस पर राजा साहब बैठ कर विवाह के लिये जा रहे थे, नाना प्रकार के बाजे बज रहे थे, तरह-तरह के नृत्य हो रहे थे। हाथी का ध्यान आकर्षित हुआ और वह इधर-उधर देखने लगा। तभी पीलवान ने उसके सिर में अकुश लगा दिया। हाथी पीड़ाग्रस्त हो उठा और इन क्रूर एवं कृतघ्न मनुष्यों की प्रवृत्ति पर सोचने लगा।

आखिरकार एक दिन उसने अपने भाई सभी पशु-पक्षियों को एकत्रित कर एक सभा की। क्रमशः एक के बाद एक ने अपना-अपना दु.ख कहना प्रारम्भ किया। बैल बोला- क्यों जी, हम दिन-रात अथक परिश्रम करके, जमीन जोत कर अन्न उत्पन्न करते हैं जिसके बिना मनुष्य दो दिन में तड़प जाता है और अन्त में मर जाता है। फिर भी उनका हमारे प्रति ऐसा निष्ठुर, निर्दय व्यवहार क्यों?

घोड़ा बोला- भाई देखो न, मनुष्य मेरी ही पीठ पर चढ़ कर बड़ी शान से इठलाते-इतराते चलते हैं और संग्राम में शत्रुओं को परास्त कर विजयी बनते हैं, पैदल चलने वालों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते हैं, हमीं से गौरव प्राप्त करते हैं। यदि हम न हों तो उनको यह शान कैसे बढ़े? फिर भी हमको ही कोड़ों-चाबुकों से पीटते हैं? हमने उनका आखिर क्या अपराध किया है?

यह सुन कर गाय, भैंस भी बोल उठीं- हां भैया! देखो न, हमारे बच्चों को दूध पीने से छुड़ा कर एक तरफ खड़ा कर देते हैं, जो उस दूध के पूरे हकदार हैं और जिनके लिये हम दूध पिलाने के बेला की घण्टों की प्रतीक्षा करती हैं उन दूधमुंहे बच्चों को घसीट कर एक तरफ बाँध कर खड़ा कर देते हैं और हमारा दूध दुह कर आप बड़े शौक से दूध, चाय, खोया, रबड़ी, रसगुल्ले, चमचम आदि तरह-तरह की स्वादिष्ट मिठाइयाँ बना कर खाते और मौज उड़ाते हैं। भला कहो न, क्या बात है जो वे इतना अन्याय हमारे प्रति करें और हम चुपचाप उसे सहन करते रहें? जैसे वे खाते, पीते, सोते हैं और अपनी सन्तान के प्रति मोह रखते हैं, वैसे ही हम भी तो करते हैं?

यह सुन कर एक-एक कर सभी बोल उठे- अरे भाई! मनुष्यों की तो बात ही क्या, हमारे बिना तो तीर्थकरों की भी पहचान नहीं होती।

जिनके चरण कमलों में राजा, महाराजा इन्द्र, धरणेन्द्र, चक्रवर्ती यादि सभी सिर झुकाते हैं और जिनके चरणों की शरण प्राप्त करने में अपना अहोभाग्य समझते हैं उन तीर्थंकरों के सन्निकट रहते हुए भी ये हमारी कद्र करना नहीं जानते। हम तो अब इस तरह संकटापन्न जीवन नहीं बिताएँगे। अब तो अन्याय का प्रतीकार करना ही होगा कि हम तो रात-दिन दु:ख उठावें और वे सब आनन्द उड़ायें!

अब प्रश्न यह हुआ कि यह निर्णय कैसे हो? अन्त में सभी ने कहा कि चलो, उपवन में जो महात्मा ध्यान लगाये बैठे हैं, उनसे ही यह निर्णय करवायें। क्योंकि वे त्यागी वैरागी हैं, उन्हें किसी का पक्षपात नहीं। अत: उन्हीं की बात प्रमाणित माननी होगी।

इसलिये सब मिलकर उनके चरणों के समीप शान्ति पूर्वक जा बैठे। महात्मा जब ध्यान से उठे तो उन्होंने अपनी रामकहानी कही। समतारस भोगी साधु ने उन्हें सान्त्वना देते हुए बतलाया कि-

देखो, भाई! पूर्व जन्म में तुम लोगों ने छल-कपट की वृत्ति रखी, बहुत से पाप कर्म किये, लोगों को धोखा दिया, अन्याय किया, दूसरे का धन चुराया, विश्वासघात किया, मांसभक्षण किया, अपना शौक पूरा करने के लिये दूसरों का शिकार किया, नि:कारण कौतुहलवश अनेक निरपराध पशु-पक्षियों को सताया, तोते आदि जानवरों को कैद में, पिंजरे में बन्द रखा, उसी के फलस्वरूप तुम्हें यहाँ से दुख उठाने पड़ रहे हैं। यदि कुछ भी धर्मसाधन किया होता तो आज मनुष्यों की तरह तुम भी सुखी होते। अब भी इस पर्याय में भी छल-कपट ईर्ष्या, कलह, द्वेष का त्याग करो, हिंसा को छोड़ो, समता भाव धारण करो, जिससे फिर तिर्यंच जाति में जन्म न हो और तज्जन्य दु:खों से निवृत्ति हो।

आज जो मनुष्य तुम पर अत्याचार कर रहे हैं और असह्य यातनाएँ दे रहे हैं, उसका फल आगामी जन्म में उन्हें भी तुम्हारे ही समान भोगना पड़ेगा।

इसलिए इस वक्त में तुम लोग शान्तिपूर्वक अपने उदय में आये हुए कर्मों के फल को भोगो और पूर्वजन्म में किये हुये दुष्कर्मों की निन्दा करो, तथा आगे के लिए प्रतिज्ञा करो कि हम अब भूल करके भी ऐसे पाप कर्म नहीं करेंगे। इस जन्म में तुम लोग यद्यपि असहाय हो, तथापि परस्पर में जितनी भी जिस किसी प्रकार से एक दूसरे की सहायता कर सको, उसे करो। इससे तुम्हारे पाप कर्म जल्दी दूर हो जायेंगे और मनुष्यों के अत्याचारों से तुम्हें मुक्ति मिल जायेगी।

साधु की प्रेमभरी मधुर वाणी सुन करके सभी पशु-पक्षियों की भीतरी आँखें खुल गईं और उन्होंने अपने-अपने मन में प्रतिज्ञा की कि आगे से हम किसी को भी नहीं सतायेंगे और जितनी बनेगी, दूसरों की सहायता करेंगे।

पड़ोसी का बेटा

'तुम्हारा बेटा पढ़ने में इतना कमजोर है?'
बेटे की माँ ने पड़ोसन से पूछा।
'तुम्हें कैसे पता चला?'
'मेरे बेटे ने परीक्षा में तुम्हारे बेटे के पेपर में से 'कॉपी' की थी
और मेरा बेटा फेल हो गया!'

17

एक गुमराह युवक के उत्थान-पतन की आश्चर्यजनक कहानी

गतांक से आगे...

वैराग्यभाव उनका चरम सीमा पर था तो प्रज्ञा उनकी गजब की थी। ऐसे अनेकों गुणों के स्वामी सिद्धर्षि आज अकेले ही, वेश परिवर्तन करके, गुरुदेव के आशीर्वाद प्राप्त किए बिना महाबोधनगर की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं। शायद उन्हें भरोसा है अपनी अकाट्य तर्कशक्ति पर। शायद उन्हें विश्वास है अपनी जबरदस्त सूक्ष्मबुद्धि पर। शायद वे निश्चिंत हैं अपने प्रबल वैराग्यभाव के कारण। शायद वे आश्वस्त हैं स्वयं को सुलभ संयमजीवन के कारण।

परन्तु यह तो अध्यात्म-जगत है। यहाँ शक्तिहीन समर्पित जीत जाता है, जबकि समर्पणहीन शक्तिशाली मात खा जाता है। जिसके जीवन में प्रभावकता का नामोनिशान न हो परन्तु आराधना का भाव जीवंत हो, ऐसा संयमी यहाँ जीत जाता है, जबकि बिना आराधक भाव का प्रभावक यहाँ हार जाता है।

महाबोधनगर की ओर प्रयाण कर रहे सिद्धर्षि के पास क्या नहीं है? प्रभावकता, प्रज्ञा, पुण्य, ये सब हैं। पर, इन सबको मारक न बनने देकर तारक बना दे, ऐसे अनंत उपकारी गुरुदेव के हृदय के आशीर्वाद नहीं हैं।

अविरत प्रवास के बाद वे महाबोधनगर पहुँच गए। वहाँ उन्होंने भिक्षुओं के आश्रम में प्रवेश किया।

किसी ने उनको पूछा-

"क्यों आये हो?"

"बौद्धदर्शन के ग्रंथों का अध्ययन करने हेतु।"

"यहीं पर रहोगे?"

"हाँ"

"यहाँ रहना तुम्हें रास आएगा?"

"रास न आने का कोई प्रश्न ही नहीं है।"

"यहाँ रहना हो तो आश्रम के नीति-नियमों का पालन करना अनिवार्य है।"

"मैं सुखार्थी नहीं, विद्यार्थी हूँ।"

"अध्ययन के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।"

"इसके लिए मैं तैयारी करके आया हूँ।"

और...

सिद्धर्षि का अध्ययन प्रारंभ हो गया। सूक्ष्मबुद्धि और प्रबल तर्कशक्ति, इन दोनों के सहारे उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को आश्चर्यचकित कर दिया। भिक्षुओं के बीच उनके चर्चे होने लगे,

"माँ सरस्वती साक्षात उसकी जिह्वा पर विराजित हैं।",

"यह तो मानो बृहस्पति का अवतार है।",

"वाद में इसे कोई पराजित नहीं कर सकता...।"

आश्रम में हर जगह चर्चित हो रही ये बातें सिद्धर्षि के कानों तक पहुँच रही थीं और वे अत्यंत हर्षान्वित थे।

परन्तु, एक दिन, रात्रि के समय सिद्धर्षि के मन में जबरदस्त ऊथल-पुथल मची।

"यदि बौद्धदर्शन में इतने सारे अकाट्य वचन हैं तो फिर बौद्ध भिक्षु बन जाने में मुझे विलम्ब क्यों

करना चाहिए? मैंने जिनवचनों का अभ्यास भी कुछ कम नहीं किया है, परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि बौद्धदर्शन शिखर पर है।

इस दर्शन में भी आत्मा की बात है, विषय-कषायों के त्याग का उपदेश है, विनयादि गुणों के विकास की बातें हैं, मैत्र्यादि भावना की बातें हैं तो अनित्यादि भावना की बातें भी हैं। परिसह सहन करने के उपदेश हैं तो शरीर का सदुपयोग साधना के लिए करने की बातों पर भी जोर दिया गया है।

यदि इस दर्शन के स्वीकार में भी आत्मकल्याण निश्चित है तो मुझे बौद्धभिक्षु बन ही जाना चाहिए।"

बुद्धि की यही भयानकता है। वह स्वयं सीमित है और फिर भी असीम को समझ लेने का दावा करने से वह बाज नहीं आती। वह स्वयं मलिन है और फिर भी जो निर्मल हैं ऐसे सज्जन, संत यहाँ तक कि परमात्मा की पवित्रता के प्रति शंका करने से वह चूकती नहीं।

यदि कान के माध्यम से शक्कर की मिठास की अनुभूति नहीं की जा सकती तो बुद्धि के माध्यम से अदृश्य प्रदेश के सत्य की अनुभूति कैसे की जा सकती है?

इतना सीधा-सच्चा सत्य स्वीकारने और समझने के लिए मन तैयार नहीं होता। इस समय सिद्धर्षि कुछ हद तक इसी दयनीय दशा के शिकार बन गये हैं। वे बौद्धभिक्षु का वेश धारण करने के लिये तत्पर हो चुके हैं। परन्तु... अपने विचार पर वे अमल करते उससे पहले अचानक उनकी आँखों के समक्ष अपने उपकारी गुरुदेव का चेहरा आ गया और महाबोधनगर की ओर प्रयाण करते समय गुरुदेव के व्यथित हृदय से निकले ये शब्द उनके कान में गूँजने लगे-

"वत्स! बौद्धदर्शन के ग्रंथों का अध्ययन करते-करते यदि तुम्हें बौद्धभिक्षु बन जाने का मन हो जाये तो श्रमण जीवन का प्रतीक जो रजोहरण मैंने तुम्हें प्रदान किया है वह तुम यहाँ आकर मुझे लौटा देना।"

"ओह! मैंने गुरुदेव को जो वचन दिया था, उसका पालन तो मुझे करना ही चाहिए।"

यह सोचकर सिद्धर्षि, बौद्ध गुरु से आज्ञा लेकर अपने गुरुदेव के पास जाने के लिए निकल पड़े। कई दिनों बाद...

"गुरुदेव! इस तरह ऊँचे आसन पर बैठना आपको शोभा नहीं देता!",

ये शब्द कान में पड़ते ही गुरुदेव ने सिर उठाकर ऊपर देखा।

"ओह! सिद्धर्षि तुम यहाँ?"

"हाँ!"

"इस तरह अचानक?
अध्ययन पूर्ण करके तुम वापस आ गये?"

"आ तो गया हूँ लेकिन...

"लेकिन क्या?"

"यहाँ रहने के लिए नहीं आया हूँ।"

"तो?"

"आपको दिए हुए वचन का पालन करने आया हूँ।"

"मैं समझा नहीं!"

"आप याद कीजिये, यहाँ से जाते समय आपने मुझसे एक वचन माँगा था। याद है आपको?"

"हाँ, मुझे याद है।"

"बताइए क्या?"

"यही कि बौद्धदर्शन का अध्ययन करते हुए तुम्हें वहीं रह जाने का मन हो जाये तो मेरा दिया हुआ रजोहरण मुझे लौटा जाना।"

"जी हाँ। बस, उसी वचन का पालन करने के लिए मैं यहाँ आया हूँ।"

"मतलब?"

"मतलब यही कि मैं बौद्धभिक्षु बन जाना चाहता हूँ।

वहाँ आश्रम में रहने वाले समस्त भिक्षु मुझे 'गुरु' के पद पर आरुढ़ करने के लिए उत्सुक हैं। वैसे तो मैं बौद्धभिक्षु बन ही गया होता, परन्तु आपने मुझसे जो वचन लिया था उस वचन का पालन करने के लिए अपने इस विचार को मैंने स्थगित रखा और आपके पास आने के लिए निकल पड़ा। और अब मैं आपके समक्ष खड़ा हूँ। आपके द्वारा दिये गये इस रजोहरण को आप स्वीकार कर लीजिए ताकि मैं वचनमुक्त हो जाऊँ तथा महाबोधनगर पहुँचकर बौद्धभिक्षु बनने के साथ-साथ सैंकड़ों-हजारों बौद्धभिक्षुओं के गुरुपद पर भी विराजित हो जाऊँ!"

सिद्धर्षि के मुख से निकले शब्दों को सुनकर गुरुदेव को भूकंप का जबरदस्त झटका लगा हो, ऐसी वेदना की अनुभूति हुई। एक समय के महान वैरागी, विशुद्ध संयमी, प्रखर बुद्धिशाली सिद्धर्षि की आज यह दशा? पर उन्हें लगा कि इस समय सिद्धर्षि को किसी भी प्रकार की हितशिक्षा देना सर्वथा व्यर्थ है। तथापि उन्हें आशा की एक किरण दिखाई दी। उन्होंने कहा, "देखो सिद्धर्षि! मैं परमात्मा के दर्शन करके आता हूँ तब तक तुम यह ग्रंथ जरा देख लो।"

इतना कहकर उन्होंने सिद्धर्षि के हाथों में तार्किक शिरोमणी पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हरिभद्रसूरि महाराज के वरद हस्त से लिखा हुआ 'ललित विस्तरा' नामक ग्रंथ दे दिया।

ग्रंथ देकर वे स्वयं तो प्रभु-दर्शन के लिए निकल गये और इधर सिद्धर्षि ने ललित विस्तरा ग्रंथ के पन्ने पलटने प्रारम्भ किये।

अरिहंत परमात्मा के स्वरूप, स्वभाव, प्रभाव इत्यादि बातों की अद्‌भुत प्रस्तुति उस ग्रंथ में थी। ग्रंथ की पंक्तियाँ जैसे-जैसे वे पढ़ते गये, वैसे-वैसे उनकी आँखें अश्रुओं की धारा बहाने लगी।

"ओह! अरिहंत परमात्मा का यह स्वरूप?

उन तारक परमात्मा का यह लोकोत्तर उपकार?

उन तारक परमात्मा का यह वात्सल्य?

जीवों के प्रति उनकी यह करुणा?"

(क्रमशः)

काम करो ऐसा कि एक पहचान बन जाए,
हर कदम ऐसा चलो कि निशान बन जाए,
यहां जिंदगी तो हर कोई काट लेता है,
जिंदगी जियो इस कदर कि मिसाल बन जाए।

17 Write What's The Right

किसी का कैसा भी दुर्व्यवहार भूलकर यदि मैं उसे चाहता रहता हूँ तो मैं कौन हूँ?

A बहादुर **B** बेवकूफ **C** बुद्धिमान **D** बेपरवाह

लात के बदले लात, यह गधे की सोच हो सकती है।
गाली के बदले गाली, यह तुच्छ आदमी की सोच हो सकती है।
आक्रमण के सामने आक्रमण, यह दुर्जन की सोच हो सकती है।
आँख के बदले आँख, यह क्रूर व्यक्ति की सोच हो सकती है।
बदमाश के साथ बदमाशी, यह कठोर व्यक्ति की सोच हो सकती है।
चालाकी के सामने दंभ, यह कुटिल की सोच हो सकती है।
संग्रहवृत्ति के सामने याचकवृत्ति, यह कृपण की सोच हो सकती है।
तलवार के सामने मशीनगन, यह निर्बल की सोच हो सकती है।
उपकार के सामने अपकार, यह कृतघ्नी की सोच हो सकती है।
लेकिन! आग के सामने पानी, लोहे के सामने मक्खन, दुर्जनता के सामने सज्जनता और कांटे के सामने गुलाब, शत्रुता के सामने मित्रता और घृणा के सामने प्रेम, यह बहादुर की सोच हो सकती है। अस्तु, 'रि-एक्शन' में ही जिसे रुचि है वह कमजोर और 'रिफ्लेक्शन' में जिसे रुचि है वह बहादुर माना जाता है।

18 मजेदार मसाला

जिन्दगी है A B C D यकीन नहीं है क्या...

A ऐतबार, B भरोसा, C चाहत, D दोस्ती, E इनायत, F फैसला, G गम, H हिम्मत, I इंतजार, J जरूरत, K ख्याल, L लम्हें, M मोहब्बत, N नाराजगी, O उम्मीद, P प्यार, Q किस्मत, R रिश्ते, S समझौता, T तमन्ना, U उदासियाँ, V विरासत, W वादा, X एक्सचेंज, Y याद।
इन सबसे मिलकर बनती है- **Z** जिंदगी।

शहर की लड़की की शादी गाँव में हो गई।
लड़की की सास ने उसे भैंस को घास डालने को बोला।
भैंस के मुँह में झाग देख कर लड़की वापस आ गई। सास बोली : क्या हुआ बहू?
लड़की बोली : भैंस अभी कोलगेट कर रही है, माँ जी।..... सास बेहोश।

बीवी - भैया ये कद्दू कैसे दिये?

सब्जी वाला - 20 रुपये किलो मैडम।

बीवी - और ये भिंडी और ये टमाटर?

पति - जल्दी करो ना मुझे ऑफिस के लिए देर हो रही है।

बीवी - तुम ज्यादा बकवास मत करो। जल्दी के चक्कर में तुम्हारे जैसा पति मिला। अब सब्जी लेने में भी जल्दबाजी नहीं करूँगी।

रात के दरिया का किनारा भी कभी आएगा
वक्त का क्या है हमारा भी कभी आएगा
मेरे हिस्से में कभी आया था अच्छा कोई दिन
पूछना था की दोबारा भी कभी आएगा।

Indian सबसे ज्यादा nervous तब होते हैं...
जब एक फटा हुआ नोट दुकानदार को देते हैं और सोचते हैं कि काश दुकानवाला ध्यान न दे...।

या तो कबूल कर मेरी कमजोरियों के साथ।
या फिर छोड़ दे मुझे तन्हाइयों के साथ।
लाजिम नहीं हर कोई होते कामयाब ही हैं।
जीना भी सीख लीजिए नाकामियों के साथ।।

माँग भरने की सजा कुछ इस कदर पा रहा हूँ
कि माँग पूरी करते-करते माँग के खा रहा हूँ...

दो मशहूर शायरों के अपने-अपने अंदाज....

मिर्जा गालिब-

उड़ने दे इन परिंदों को आज़ाद फिजां में 'गालिब'।
जो तेरे अपने होंगे वो लौट आएँगे....।

शायर इकबाल का उत्तर -

ना रख उम्मीद-ए-वफ़ा किसी परिंदे से....
जब पर निकल आते हैं....
तो अपने भी आशियाना भूल जाते हैं...."

19 यू.पी. विचरण का आँखों देखा हाल

आगमज्ञाता योगिराज ग्रामोद्धारक गुरू सुदर्शन की छवि पूज्य गुरूदेव श्री अरूणचंद्र जी म.सा. मौन मनस्वी पूज्य श्री अनुराग मुनि जी म., श्री अभिषेक मुनि जी म., श्री अभिनंदन मुनि जी म. आदि ठाणे-4 का पावन विचरण उत्तर प्रदेश की पावन धरा पर हो रहा है। वर्ष 25 में यू.पी., भारत और जैनों में विशेष चर्चित हो रहा है।

उधर मुख्यमंत्री योगी जी महाकुंभ के माध्यम से हिंदुत्व की लहर पैदा कर रहे हैं और इधर जैनों के आराध्य योगिराज गुरूदेव जैनत्व की लहर पैदा कर रहे हैं।

प्रयागराज में तो फिर भी भगदड़ की संभावनाएँ उठ रही हैं, लेकिन इनके प्रभावशाली सान्निध्य में हर विशाल प्रवचन सभा और ग्राम सम्मेलन निर्विघ्नता और निश्चिंतता से संपन्न हो रहे हैं।

आईये जानते हैं क्षेत्रानुसार गुरू म. की विहार यात्रा-

1. दोघट में हुआ नवम् सम्मेलन

गुरु म. सन् 2017 में छतरी पर पधारे तो समाज की लापरवाही से मन खिन्न हो गया। महापुरूषों की पुण्य-भूमि पर उपलों की पैदावार और व्यसनी लोगों का गोष्ठि-स्थल बन गई थी। इनका इशारा हुआ और ऐसा भव्य एवं आकर्षक समाधि स्थल बन गया, जो आसपास जैनों में अन्यत्र दुर्लभ है।

इस बार का सम्मेलन सर्वाधिक रौनक से संपन्न हुआ। दो ढाई हजार की गिनती तो आम जनों के मुख पर थी, तीन हजार से अधिक ऐतिहासिक पत्रिका व अनेकों पुस्तकों के पठन से गुरू म. इतिहास केसरी हो गए। अत: उस दिन प्रवचन के माध्यम से दोघट क्षेत्र के अतीत की झाँकियों का अनावरण किया।

प्रबुद्ध श्रावक श्री अमितराय जैन ने कहा- इतिहास को लेकर जो प्रयास गुरूदेव का हो रहा है, वह उत्तरी भारत की स्थानकवासी परंपरा में अनुपम और अनूठा है। प्रवचन सभा में बहुत से श्रोताओं ने प्रतिवर्ष 100 मुखवस्त्रिका वितरण का नियम लिया।

अंतिम प्रवचन समाधि के ऊपरी तल पर हुआ। जहाँ देव-कक्ष की मान्यता के कारण भय का माहौल है। गुरु म. ने कहा- समाधि पर दिया नहीं जलाना। महापुरूषों के उपकारों को स्मरण करते हुए नवकार लोगस्स पढ़ें। यहाँ पर भी उत्तराध्ययन भगवान की स्थापना हुई।

2. भगवानपुर ग्राम बना जैन ग्राम

भगवानपुर में 1 ही जैन घर होने के बावजूद भी सैकड़ों श्रद्धालु गुरू म. की अगवानी में पधारे। यहाँ का स्थानक सन् 1935 में निर्मित हुआ था और 25 साल से बंद प्राय: ही था।

यहाँ पर श्री मुखराम जी म. का समाधि स्थल है। जिसकी हालत कमजोर थी। दोनों ही

स्थलों का नवीनीकरण हुआ। गुरू म. के पदार्पण से ग्रामवासी झूम उठे। दो-दो समय कथा हुई। राठी / राणा और पवार गोत्रियों ने गुरू धारणा लेकर जैन धर्म अपनाया।

31 एकड़ की गौशाला का नामकरण गुरू म. के श्रीमुख से हुआ- राम-कृष्ण-महावीर जैन गौशाला। साढ़े तीन बीघे में विवाह मंडप बनने की घोषणा हुई, जिसका नाम भी राम-कृष्ण-महावीर जैन विवाह मंडप स्वीकृत किया गया।

29 जनवरी का प्रवचन समाधि स्थल पर ग्राम सम्मेलन के रूप में आयोजित हुआ। बड़ौत, मेरठ, दिल्ली के जैनों के साथ-साथ आसपास के अन्य नये श्रद्धालु भी आए।

3. निरपुड़ा में नायाब नजारा

निरपुड़ा की जैन स्थानक 103 साल पुरानी है। स्थानक की दीवारें किले के समान मोटी और सुदृढ़ हैं। गुरु सेवक परिवार द्वारा शताब्दी वर्ष में प्याऊ का निर्माण करवाया गया।

गुरु म. ने स्थानक के नवीनीकरण हेतु इंगित किया। गुरू म. की प्रेरणा से पक्षी टावर बनाने का निर्णय लिया गया। पन्द्रह जगहों के साथ-साथ ग्रामवासियों की 400 से अधिक संख्या वाली प्रवचन सभा में 5 लाख के लगभग दान-राशि एकत्रित हुई एवं राणा परिवार के द्वारा पक्षी टावर हेतु जगह दान दी गई।

गुरू म. ने प्रेरणा की। निरपुड़ा के वे निवासी जो बड़े शहरों में रह रहे हैं, उन सबका नाम पत्थर पर उट्टंकित कर स्थानक में लगाया जाए, ताकि उनकी आने वाली पौध को पता तो रहे कि हम निरपुड़ा के स्थानकवासी जैन हैं। भगवानपुर के 30-35 श्रद्धालु यहाँ के ग्राम सम्मेलन में भी शामिल हुए। भगवानपुर तो साथ-साथ चल पड़ा है।

4. दाहा में दे दनादन बरसे गुरूवर

जो गाँव मुनिराजों के लिए मात्र पड़ाव है, वहाँ पर भी गुरू म. चार-चार दिन लगाकर महती धर्म-प्रभावना कर रहे हैं।

दाहा में दो-दो समय कथा हुई। यहाँ की स्थानक 125 वर्ष पूर्व निर्मित है। सन् 2002 के बाद इसका नवीनीकरण करवाया गया। फिलहाल यहां 7 ही जैन घर हैं। पर श्रद्धालु घर की बहुलता है।

4 फरवरी को दाहा सम्मेलन पर स्थानीय व बाहरी दाहावासियों की भारी उपस्थिति दर्शनीय रही। रूड़की, पूर्ण, मेरठ, गाजियाबाद, देहरादून व दिल्ली जैसे अनेक स्थानों से दाहावासी आए हुए थे। आपसी तालमेल से सभी खुश हुए। गुरु म. हर वर्ष सम्मेलन करने की प्रेरणा की। जैसे ही पक्षी टावर हेतु बात प्रारंभ की तो चौधरी परिवार ने जगह देने हेतु उदारता दिखाई। 21 सदस्यों की कमेटी का गठन करने हेतु योजना बनी। गुरू म. की कृपा से टावर का नाम रखा गया- राम-श्याम-महावीर पक्षी टावर। यहाँ के युवकों ने विहार एवं गोचरी सेवा का जी भरकर लाभ लिया।

5. सैनपुर में सजा 'सुदर्शन - दरबार'

समूची यू.पी. के गाँवों में सैनपुर गाँव के साथ गुरू म. का प्रेम अनूठा है। गुरू म. के पदार्पण को लेकर उत्साह का माहौल बना हुआ था। महामंत्री नीरज जैन, संघ-सारथी हिप्पी जैन, श्रावक अनुराग जैन, दाहा से विहार में ही उपस्थित हो गए।

5 फरवरी ग्राम सम्मेलन के दिन तो पूरा जमनापार ही उमड़ पड़ा। गाड़ियाँ ही गाड़ियाँ गली में नजर आ रही थी। कुशल वक्ता मोंटू जैन के अनुभव में यह नजारा तो अभूतपूर्व था। सूर्य नगर की उपस्थिति सबसे खास रही।

प्रवचन सभा में सैनपुर प्रमुखों द्वारा एक साथ चार निर्णय लिए गए- जीतमल जी म. का स्मारक निर्माण, पक्षी टावर निर्माण, स्थानक नवीनीकरण एवं प्रतिवर्ष ग्राम सम्मेलन।

घोषणा करते ही दानराशि की बारिश होने लगी। **G.S.P.** की माँ कहे जाने वाले श्रावक विजय जैन ने 21 हजार रूपये का दान दिया।

6. सम्मेलन से पड़ासौली हुई प्रफुल्लित

गुरु म. के विचरण में 4 दिनों का समय पड़ासौली के नाम रहा। प्रधान श्री ललित जैन और महामंत्री श्री जयप्रकाश जैन हर आज्ञा पर तैनात रहे। जैनों के घर तो अल्प हैं, पर सैनी एवं चौधरी वर्ग के श्रद्धालुओं की भी भावना प्रशस्त है। 8 फरवरी को पड़ासौली सम्मेलन हुआ। शामली, बुढ़ाना, देहरादून, मुजफ्फर नगर, दिल्ली, निरपुड़ा, दाहा, भगवानपुर, दोघट आदि स्थानों से श्रावक उपस्थित रहे। अनिल जैन के सुपुत्र नमो जैन बस के साथ गुरू चरणों में पहुंचे। सम्मेलन का नजारा ऐतिहासिक रहा। यहाँ पर भी प्रतिवर्ष सम्मेलन की भावना साकार हुई।

7. बुढ़ाना में बरसी जिनवाणी

बुढ़ाना क्षेत्र गुरू-परंपरा का सुहाना क्षेत्र है। राहुल जैन, मोहित जैन, नितिन जैन समेत समस्त युवक मण्डल की सेवा सराहनीय रही। चार दिनों के प्रवास का अंतिम प्रवचन काली सुकाली के पाठ की आराधना के रूप में हुआ। **Demand** थी 100 जोड़ों की, बुढ़ाना ने सवाया कर गुरु आज्ञा को निभाया, उसी का परिणाम रहा **Housefull.**

बड़ौत श्रीसंघ पारणों की अग्रिम तैयारियों के उद्देश्य से गुरू चरणों में हाजिर हुआ।

8. शाहपुर में हुआ 150 जोड़ों के साथ काली-सुकाली का पाठ

शाहपुर में स्थानकवासी आम्नाय के 7 ही घर हैं। बहुत मनोरम जैन स्थानक बना हुआ है। हर्षित जैन, शुभम जैन, शकुन जैन, पारस जैन, नमन जैन, अनंत जैन सब युवाओं की सेवाएं यादगार बनी। गुरू सेवक परिवार का गठन किया गया। मुखवस्त्रिका को भूलते जा रहे श्रावकों को गुरू धारणा करवाकर पुनः स्मृतिस्थ करवाया कि हम निराकार उपासना के उपासक हैं।

श्री अभिनंदन मुनि जी म. ने घर-घर पगलिया कर श्रावक एवं श्रद्धालुओं को स्थानक आने के लिए प्रेरित किया। श्री रामधारी जी के सुपुत्र राजीव जैन ने स्थानक में सहयोग हेतु एक लाख की दानराशि दी। रविवार का दिन काली-सुकाली का पाठ हुआ। आसपास का सारा ही इलाका उमड़ा हुआ था। मुजफ्फर नगर का संयुक्त संघ पदार्पण की विनती के साथ पेश हुआ।

9. खतौली का पहली बार खुला खाता

खतौली में 500 के लगभग दिगम्बर घर हैं। कुछ परिवारों ने पधारने की विनती की। गुरू म. का मन बना। 23 कि.मी. का विहार कर खतौली पधारे। दिगम्बर समाज के प्रमुख चेहरे स्वागत में आगे आए। गुरू म. ने क्रांतिकारी प्रवचनों में मुख्यमंत्री योगी की तर्ज पर हुंकार लगायी 'बटेंगे तो कटेंगे।' भले ही हम स्थानकवासी और दिगम्बर हैं पर दुनिया के लिए हम सिर्फ जैन हैं। माहौल बनने में देर नहीं लगी। चन्द्रप्रभु मंदिर का ऊपरी तल भरने लगा। स्थानकवासी घरों को खोजा गया। गुरू म. ने अथक प्रयास कर कमेटी तैयार की। जैन स्थानक की योजना बन रही है।

गुरू म. की जोरदार प्रेरणा को देखते हुए लगता नहीं है कि ज्यादा दिन तक खतौली बिन स्थानक सूनी रहेगी। खतौली में 9 जैन मंदिर हैं। ऐसे में स्थानक निर्माण करना एक क्रांतिकारी करामात होगी। गुरू म. की प्रेरणा से यह यू.पी. के इस प्रवास का यह 8वाँ संघ बनेगा।

आगे गुरू म. मुजफ्फर नगर, सहारनपुर पदार्पण करेंगे।

हर स्थान पर गुरु म. ने पुरजोर कहा- जन्मभूमि का कर्ज चुकाना कठिन है। इसलिए शादी, बालक जन्मोत्सव आदि प्रसंगों पर जन्मभूमि में आएँ तथा स्थानक में नवकारादि का जाप करें। सभी को सौगन्ध दी। आप भी इस प्रेरणा से वर्ष में एक बार अवश्य जन्मभूमि को शीश झुकाकर आएँ।

10. मुजफ्फरनगर में लगा मेला

मुजफ्फरनगर गुरु परंपरा के क्षेत्रों में शुमार है। श्री संघ लगातार विनती कर रहा था। 12 वर्षों बाद अभिलाषा पूर्ण हुई। पहले मण्डी में विराजना हुआ। श्रावक श्री मनमोहन समेत गुरु परंपरा के सब श्रावक अग्रणी रहे। रविवार का दिन स्नेह बंधन के रूप में मनाया गया। पिता-पुत्र परस्पर कर्त्तव्यों को समझें, इस अशय का प्रवचन हुआ।

शहर स्थानक भी हाउसफुल रहा। ओसवाल परिवारों की दीवानगी तो जग जाहिर हो ही रही थी। अन्य परिवारों में भी गजब श्रद्धा भाव देखा गया।

रविवार का दिन 1008 श्रावक और श्राविकाओं की 'काली-सुकाली' की आराधना के साथ आयोजित हुआ।

मुजफ्फरनगर के अनुभवी लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा- इतना सैलाब तो चातुर्मासों में भी देखने में नहीं आया।

11. देवबंद में बजी स्थानक की दुंदुभि

देवबंद दिगम्बर परंपरा का जैन क्षेत्र है। यहां पर श्वेताम्बर परंपरा का कोई घर नहीं है। स्थानकवासी मुनिराजों का आगमन भी पड़ाव के रूप में ही होता है। गुरु म. की क्रांतिकारिता ने यहाँ के जैनों को प्रभावित कर दिया। चुटकियों के पलों में स्थानकनुमां मकान स्थानक के लिए ले लिया गया। प्रवचनों में खूब रंग लगा। जीएसपी की महिला टीम का नवकार मण्डल भी बना, जो हर माह जाप करेगा। उत्तर प्रदेश के विचरण के दौरान स्थानकवासी परंपरा की सुरक्षा और उत्थान के लिए जो प्रयास गुरु म. कर रहे हैं, वह भविष्य के लिए सुनहरा इतिहास है।

20 बांगर प्रदेश में हुई बल्ले - बल्ले

धीर, वीर, गंभीर युवा मनीषी श्री मनीष मुनि जी म., श्री अतिमुक्त मुनि जी म., श्री अमृत मुनि जी म., ठोण-3 का पावन विचरण सिरसा-सर्दुलगढ़-रतिया के बाद बांगर प्रदेश में हो रहा है। सर्वत्र ही जागृति की धूम मची हुई है।

युवा मुनिराजों के युवा हौसलों के आगे जन-श्रद्धाएँ खुद-ब-खुद उमड़ रही हैं।

कुलां से टोहाना पधारे। स्तरीय धर्म प्रभावना हुई। आचार की दृढ़ता और प्रवचन की प्रभावकता से हर कोई प्रभावित हुआ। जाटों की बहुलता वाले ग्राम बिठमड़ा में भी धर्म भावना का खूब रंग दिया। गुरुदेव श्री अरुणचंद्र जी म. की कृपा ने इस गाँव में जैनों का रंग भर दिखा है।

उकलाना मंडी भी पधारे। तेरापंथ भवन में मध्याह्न के समय प्रवचन हुए। पूरा हाउसफुल। उकलाना की गुरु भक्ति ने मोर्चा मार लिया। दिन के समय इतनी रौनक! इस आश्चर्य का जवाब ढूंढने में कोई सफल न हो सका। आसपास के श्री संघ ने होली चातुर्मासी पाने का भरपूर प्रयास किया। लेकिन प्रयास का परिणाम मिला नरवाना को। चार प्रवचन हुए। नरवाना वाले मान और जान गए कि गुरुदेव के शिष्य उन्हीं का रूप हैं। जो हर किसी को अपना बनाकर धर्म से बाँध देते हैं।

उचाना की रौनकें तो बांगर इलाके में मैन ऑफ द सीरिज रही। मुनिराज और भक्तजन, दोनों ही एक दूसरे के दीवाने हो गए। पूज्य श्री मनीष मुनि जी म. ने यहाँ त्रिदिवसीय मौन साधना की। साधना के पश्चात् पू. म. श्री ने शुभ दर्शन से मनोवांछित फल की आस लगाये श्रद्धालुओं को प्रवचन में ही कहा- मैं तो पहले जैसा ही सामान्य संत हूँ। महावीर का धर्म इन मीठी गोलियों में विश्वास नहीं रखता। मुनि श्री के इस स्पष्ट दृष्टिकोण से सब नत हो गए। कहाँ वो सस्ते सुविधावादी तथाकथित संन्यासी, जो नाम पाने के लिए कुछ भी करते हैं; और कहाँ ऐसे निर्लेप मुनिराज, जिनकी साधना मात्र सिद्धत्व के लिए है।

पूज्य श्री अतिमुक्त मुनि जी म. की रामायण ने सभा को झूमने के लिए मजबूर कर दिया। उनकी गायन कला के तो सब कायल हो गए।

श्री अमृत मुनि जी सेवा-स्वाध्याय से साधना की नींवों को पुख्ता कर रहे हैं।
फिलहाल मुनिराज त्रय बड़ौदा में विराजमान हैं। यहाँ से लम्बा विहार कर शीघ्रता से रोहतक पदार्पण करेंगे। वहाँ 4 अप्रैल को ध्वजारोहण होगा। आपकी उपस्थिति अनिवार्य है। दर्शन/प्रवचन का लाभ लें। पुण्यार्जन करें। पूज्य मुनिराजों का बड़ौत पारणों पर पधारना संभावित है।

21 पंजाब विचरण, चातुर्मास रोहिणी-दिल्ली में

गुरु हनुमंत श्री अमन मुनि जी म. श्री अरविंद मुनि जी म. ठाणे-2 का पावन विचरण लगातार तीन माह से पंजाब प्रांत में हो रहा है। सर्वत्र ही धर्मप्रभावना का माहौल बना हुआ है। खनौरी नववर्ष के बाद लैहरा होते हुए आगे सुनाम पधारे। सप्ताह भर का समय लगा। पूज्य महाराज श्री की आलस्यभेदी प्रेरणा ने सभी के लिए स्थानक नजदीक कर दिया। रौनकों के साथ जिनशासन की महान प्रभावना तो तब हुई, जब इन्द्रापुरम में नूतन जैन संगठन बना। इसके बाद छाजली, क्राचो, दिड़बा की प्यासी धरती को जिनवाणी से सरसब्ज किया। संघशास्ता गुरूदेव की दीक्षा भूमि पर उनके पौत्र शिष्य का करिश्मा सबने देखा। मालेरकोटला में संक्रांति के दिन तो एक अलग ही नजारा था।

धुरी में भी धर्म की लहर से सब धन्य हो गये। होली चातुर्मासी का पर्व बठिण्डा की पुरजोर विनती और निरंतर उपस्थिति से उन्हें ही दिया गया। सन् 2023 की चातुर्मास भूमि पर रौनकें एक बार फिर चातुर्मास की यादें करवाने के लिए उमड़ी। बठिण्डा को गुरू म. की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। इस गौरव को चार से भी ज्यादा चांद लगाने वाले हैं उनके ही लख्ते-जिगर हनुमान श्री अमन मुनि जी म.।

पूज्यद्वय का मानसा की ओर विहार हो चुका है। बठिण्डा की सेवायें विहार में भी अनथक होकर साथ-साथ गतिमान हैं। श्री अरविन्द मुनि जी म. की समर्पण और सहयोग भरी सेवायें रंग भर रही हैं। आत्माराधना के साथ शासन प्रभावना में लीन पूज्य मुनिवरों की साता हेतु हार्दिक कामनाएं। चातुर्मास रोहिणी सेक्टर 5 और वीर अपार्टमेंट में तय हुआ है।

ऐसी सद्बुद्धि चाहिये

खिलौने छोड़ने की बुद्धि मुझमें आठ वर्ष की उम्र में आयी।गालियाँ बोलना बंद करने की बुद्धि मुझमें अट्ठाईस वर्ष की उम्र में आयी।

'देर रात तक घर के बाहर भटकते रहना ठीक नहीं', यह बुद्धि मुझमें अड़तीस वर्ष की उम्र में आयी।'वासनापूर्ति के प्रत्येक प्रयास में खाली ही होते रहना है' यह बुद्धि मुझमें अट्ठावन वर्ष की उम्र में आयी।परन्तु मैं तो ऐसी सद्बुद्धि का स्वामी बनना चाहता हूँ, जो मुझे उम्र के आधार पर गलत आचरण से मुक्त न करे, परन्तु सही समझ के आधार पर ही गलत आचरण से दूर रखे।

Arihant Jewels
(Rode ka mohana wale)
(A House Of Fine Diamond Jewellery)
100% Hallmark Gold & Certified Diamond Jewellery
Loose Diamonds & Gemstones
Nitin Jain
+91 9718555757
Akshay Jain
+91 8802555757
Shop no. 102, First Floor, City Centre Mall, Deshbandhu Gupta Road, Karol Bagh,
New Delhi-110005 | insta_id:- arihantjewels_aj

श्री सुदर्शन गुरवे नमः
!! श्री महावीराय नमः !!
श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः
झड़ोदाकलां परिवार द्वारा
पूज्य गुरुदेव
श्री अरूण मुनि जी म. के पावन चरणों में
कोटिशः वन्दन नमन
M/S M.P. DALL MILL
Manufacturers of Pulses
Office : 3959/1, Naya Bazar, Delhi-110006
Mfg. Unit :
M-27, Sector-1, DSIDC Industriel Area, Bawana, Delhi-39
E-47, Sector-2, DSIDC Industriel Area, Bawana, Delhi-39
सुरेन्द्र जैन
9810589013
दीपक जैन
9810200481

श्री महावीराय नमः

श्री सुदर्शन गुरवे नमः

श्री अरुण गुरवे नमः

Vinod Jain
Chairman and MD

परम पूज्य गुरुदेव
श्री अरुणचन्द्र जी म.
के श्री चरणों में कोटिशः वंदन नमन

Ashi Jain
Director

GOYUM GROUP
INDIA
SINCE 1971
• EXTRACTION • REFINING • RECYCLING
A Govt. of India Recognised Star Export House

We Specialize in Extracting Edible and Non-edible Oil From Various Types of Vegetable Oil Seeds & Nuts Such as :

Mustard / Rapeseed / Canola, Soyabean, Groundnuts, Sunflower, Cottonseed, Copra / Coconut, Neem, Sesame, Castor, Palm Kernel, Flaxseed, Jatropha, Shea Nuts, Cashew Nut Shell, etc.

Manufacturer & Exporter of:

Oil Mill Plant

Solvent Extraction Plant

Cooking Oil Refinery Plant

Animal Feed Plant

MSW, Plastic & Industrial Shredder

Oil Mill Spare Parts

Why GOYUM?

- Exported to 63+ Countries
- 51+ Yrs. of Experience Cum Expertise
- 40000 Sqm State-of-the-Art Manufacturing Facilities
- Best Quality Product with Timely Delivery
- 750+ Turnkey Projects Worldwide
- Registered with UN Agencies
- Highly Qualified & Skilled Staff
- Excellent After Sales Support

GOYUM SCREW PRESS
Plot No. 2581, Industrial Area - A, Ludhiana - 141003 (Punjab) INDIA
+91 99157 43183 | jain@oilmillmachinery.com | sales@oilmillmachinery.com
www.oilexpeller.com | www.goyumgroup.com | goyum group

श्री सुदर्शन गुरुवे नमः

श्री महावीराय नमः

श्री अरुण गुरुवे नमः

Gaurav Jain
+91 9319873700

Diwaker Jain
+91 9311744176

Mukesh Kumar Jain
+91 8130892364

परस्परोपग्रहो जीवानाम्
॥ जय जिनेन्द्र ॥

GyanRachana
Tours and Travels

We specialize in all types of travel experiences, from Domestic to International destinations.
Whether you seek adventure, relaxation, or cultural exploration, we have the perfect package for you.

Our Service Included

- Customized Packages
- Corporate Tour Packages
- E-Visa Assistance
- Ticketing Services
- Comprehensive Travel Support
- Travel Insurance

For Package Booking - Gaurav Jain 9319873700 | **For Flight Booking** - Diwaker Jain 9311744176

For More Information : **Website :** www.gyanrachanatours.com **Email :** info@gyanrachanatours.com saleshead@gyanrachanatours.com

Sachin Jain

Nitin Jain

Kapil Jain

Funkee Star

Premium Wear

Kids Party Wear Colletion
Baba Suit, Indo Western, Sherwani
Kurta Pajama, Coat-Pant

Mfg. By

Sudharma Garment LLP

Shop : X/1297, Bhature Wali Gali, Gandhi Nagar, Delhi-110031
Head Office : Plot No. B-30, Sector-A-1, Tronica City Industrial Area, Gaziabad (UP)
Branch Office : X/3489-90, Street No.-4, Raghubar Pura No.-2, Ghandhi Nagar, Delhi-110031
Ph : 9354776177, 9810393816, 9212229381, 9250655206

!!श्री सुदर्शन गुरवे नमः!! !!श्री महावीराय नमः!! !!श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः!!

Prithviraj Jain
9464800648

Rattanlal Jain
9417100046

Sanjeev Jain
9876239933

Sanket Jain
9517999000

Jain Agro Industries

Rice Processors & Exporters

Specialist In Basmati Rice

Contact : 9876239933 I jainagro77@gmail.com
Sultanpur Road, Kapurthala-144601 (Punjab)

!!श्री महावीराय नमः!!

!!गुरु मया-मदन-सुदर्शन संघ की जय!!

संघशास्ता पूज्य गुरुदेव

श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के सुशिष्य

आगमज्ञाता पूज्य गुरुदेव

श्री अरुणचन्द्र जी म. सा.

युवामनीषी श्री मनीष मुनि जी म. सा.

श्री अमन मुनि जी म. सा.

आदि संतवृन्द के चरण कमलों में

कोटिशः

वन्दन नमन

अशोक जैन जाजवान - 9810520815

अंशुल जैन व सम्भव जैन

!!श्री मया मदन गुरवे नमः!! !!गुरु मया-मदन-सुदर्शन संघ की जय!! !!श्री तपोधनी त्रिवेणी गुरवे नमः!!

!!श्री सुदर्शन गुरवे नमः!!

आगमज्ञाता पूज्य गुरुदेव

श्री अरुणचन्द्र जी म. सा.

आदि सन्तवृन्दों के चरणों में सादर कोटिशः वन्दन नमन

अहिंसा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अहिंसा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Pankaj Trading Co.

Deal In -ferrous & non ferrous metal

खेड़ीतगा परिवार

नीरज जैन

9818741201

सुरेन्द्र जैन

9811537296

पंकज जैन

9871233060

खेड़ीतगा परिवार

425-Deepali Enclave, Pitampura, Delhi

हर जगह श्रद्धालुओं का तांता देखते ही बनता था

सहारनपुर

सहारनपुर

मलेरकोटला

भटिंडा

नरवाना

भिक्की

RNI No. DELBIL/2017/71825 DL No. DL(N)/365/2023-25 POSTING DATE 10-11

!! णमो तवस्स !!

!! श्री ऋषभदेवाय नमः !!

!! श्री महावीराय नमः !!

जो आत्माएँ तप से खुद को निखार रही हैं।
बड़ौत की पावन धरती उन्हें पुकार रही है।
आओ तपस्वियों! धन्य करो इन नयनों को।
हमारी श्रद्धाएँ, आरती तुम्हारी उतार रही हैं।

गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के सुप्रिय शिष्य रत्न

आगमज्ञाता योगीराज पूज्य गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.

युवामनीषी श्री मनीष मुनि जी म. आदि ठाणे-7 के सान्निध्य में

लगभग

200

पारणों का भव्य आयोजन

आप पधारेंगे तो पाओगे

अक्षय तृतीया के महत्त्व को दर्शाती हुई प्रेरक नाटिका

गुरु महाराज आदि मुनिवृंद के पावन दर्शन एवं मंगलपाठ

मधुर गायकों के मनमोहक भजन

सपरिवार इष्ट मित्रों सहित अवश्य पधारें

- ध्यान दें -

आपकी जानकारी में कोई वर्षीतप चल रहा हो तो **8784869130** पर सूचित करें।
अनुमोदना का लाभ आपको ही मिलेगा।

-निवेदक-

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज (मण्डी) बड़ौत - (उ.प्र.)

स्वामी-मुद्रक एवं प्रकाशक दिनेश जैन द्वारा पारस ऑफसेट प्रा. लि. कुण्डली इंडस्ट्रियल एरीआ, कुण्डली (हरियाणा) से मुद्रित एवं 424, चौथी मंजिल, डी-मॉल, ट्विन डिस्ट्रिक सैक्टर-10, रोहिणी, दिल्ली-110085 से प्रकाशित।